भक्त
भगवान
में
लीन
होता है।
-महात्मा गांधी-

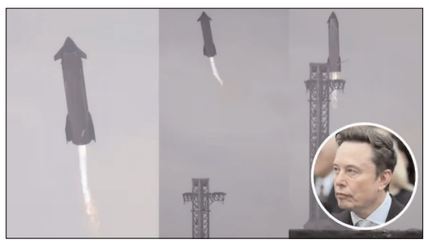
दैनिक
लोक जीवन
www.lokjeewan.com
जयपुर एवं भीलवाड़ा से प्रकाशित राज्य स्तरीय समाचार पत्र
संस्थापक - स्व. डॉ. शिवकुमार जी त्रिवेदी

लोक जीवन में विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें:-
- : जयपुर : -
0141-4038281
- : भीलवाड़ा : -
8306792625

वर्ष- 19 | अंक- 197 | जयपुर. सोमवार . | 16 नवम्बर , 2026 | RNI No. RAJHIN/2008/26744 | मूल्य 1 रूपया | पृष्ठ - 4

न्यूज इनबॉक्स

मस्क के स्टारशिप-15 ने रचा इतिहास, अंतरिक्ष से लौटकर लॉन्च टावर में हुआ कैच



केप कैनवेरल (एजेंसी)। इलॉन मस्क की स्पेस कंपनी स्पेसएक्स के सबसे ताकतवर रॉकेट 'स्टारशिप 15' ने वो कर दिया जो आज तक किसी रॉकेट ने नहीं किया था। ये एक पूरा राउंड ट्रिप है। लॉन्च से ऑर्बिट में जाना और वापस उसी लॉन्च पैड पर आना। शिप का वापस आना ही सबसे मुश्किल हिस्सा था। बूस्टर पहले 3 बार कैच हो चुका है। शिप का ऑर्बिटल स्पीड से वापस आना, री-एंट्री झेलना, पलटना और हवा में रुककर आर्म्स में आना- ये पहले कभी नहीं हुआ था। स्टारशिप स्पेसक्राफ्ट (ऊपरी हिस्सा) और सुपर हैवी बूस्टर (निचला हिस्सा) को कलेक्टिवली 'स्टारशिप' कहा जाता है। इस व्हीकल की ऊंचाई 403 फीट है। यह 'स्टारशिप' की 15वीं टेस्ट फ्लाइट थी। यह लॉन्च अमेरिका के टेक्सास स्थित स्टारबेस से भारतीय समयानुसार शनिवार सुबह 4:15 बजे लॉन्च की गई है। स्पेसएक्स का प्लान 'डबल कैच' था। यानी बूस्टर भी वापस आए और यान भी। लेकिन बूस्टर में वापस आते वक्त टेक्निकल दिक्कत आई। कंट्रोलर ने उसे टावर से हटाकर गल्फ ऑफ मेक्सिको की तरफ डायवर्ट कर दिया, जहां वो फट गया। ये वी 3 बूस्टर था। पुराने वर्जन को स्पेसएक्स 3 बार पकड़ चुका है, लेकिन वी3 को पहली बार पकड़ने की कोशिश थी। स्पेसएक्स की केट टाइस ने बताया- वापस आते वक्त बूस्टर के इंजन बहुत जल्दी बंद हो गए। बूस्टर के गाइडेंस सिस्टम को लगा कि वो सही पोजिशन में नहीं है, इसलिए उसने अपने आप पानी की तरफ डायवर्जन और सेल्फ-डिस्ट्रक्शन शुरू कर दिया।

7 साल से अलग रह रहे दंपती को हाईकोर्ट ने दी तलाक की मंजूरी



जयपुर (कासं)। राजस्थान हाईकोर्ट ने पति-पत्नी की आपसी सहमति से 16 साल पुरानी शादी को खत्म कर दिया है। जस्टिस सुदेश बंसल और जस्टिस अनुरूप सिंघी की अदालत ने यह आदेश फैमली कोर्ट के फैसले के खिलाफ दायर पत्नी की अपील को निस्तारित करते हुए दिया। कोर्ट ने कहा- हिंदू मैरिज एक्ट में धारा-13बी (आपसी सहमति से तलाक) जुड़ने के बाद अब हिंदू विवाह के जन्म-जन्मांतर के संस्कार होने की पुरानी धारणा में मौलिक बदलाव आया है। अब शादी को एक अनुबंध (कॉन्ट्रैक्ट) के तौर पर देखा जाता है। जिसे पक्षकार (पति-पत्नी) आपसी सहमति से शुरू कर सकते हैं। रिश्ता न चले तो आपसी सहमति से समाप्त भी कर सकते हैं। फैमिली कोर्ट ने पति के वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना (पहले जैसी स्थिति) की याचिका को स्वीकार करते हुए पत्नी को उसके साथ रहने के आदेश दिए थे। जिसे पत्नी ने हाईकोर्ट में चुनौती दी थी। लेकिन हाईकोर्ट में सुनवाई के दौरान दोनों ने आपसी सहमति से तलाक का प्रार्थना पत्र दायर किया। इस मामले में अदालत के सामने मुख्य कानूनी सवाल यह था कि क्या धारा-9 (वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना) के खिलाफ लंबित अपील को सीधे धारा-13बी (आपसी सहमति से तलाक) की याचिका में परिवर्तित किया जा सकता है? इस पर कोर्ट ने कहा- वैवाहिक मुकदमे एक विशेष श्रेणी में आते हैं। अदालतों का यह कर्तव्य है कि वे पक्षकारों की पीड़ा और मानसिक कष्ट को समझे। वहीं ऐसे मामलों को समाप्त करने के लिए समझौते को प्राथमिकता दें। आपसी सहमति से होने वाले तलाक में अर्जी दायर करने के बाद 6 महीने की कूलिंग-ऑफ अवधि गुजारना जरूरी है। लेकिन हाईकोर्ट ने कहा कि दोनों करीब 7 साल से अलग रह रहे हैं। इनके आपसी सुलह के सभी प्रयास विफल हो चुके हैं। ऐसे में 6 महीने की प्रतीक्षा केवल इनकी पीड़ा को और अधिक बढ़ाएगी। ऐसे में अदालत ने 6 महीने की प्रतीक्षा अवधि को माफ कर दिया। 16 साल पहले दोनों की शादी 5 फरवरी 2010 को हुई थी। उनके एक 15 साल का बेटा भी है। दोनों दिसंबर 2019 से अलग रह रहे हैं। फैमली कोर्ट-1, अजमेर ने 7 अगस्त 2025 को पति की वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना याचिका पर उसके पक्ष में फैसला देते हुए पत्नी को उसके साथ रहने के आदेश दिए थे। इसके खिलाफ पत्नी ने हाईकोर्ट में अपील दायर की थी। अपील के लंबित रहने के दौरान ही दोनों मध्यस्थता (मीडिएशन) और परिजनों के प्रयासों से आपसी सहमति से तलाक लेने पर सहमत हो गए और 8 अक्टूबर 2026 को एक संयुक्त आवेदन हाईकोर्ट में पेश किया।

गढ़चिरौली कार्यक्रम में वर्चुअली शामिल हुए प्रधानमंत्री, दिल्ली में बिरसा मुंडा को दी श्रद्धांजलि

नक्सलवाद-माओवाद पर प्रहार से आदिवासी परिवारों को मिली सुरक्षा : मोदी

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि नक्सली हिंसा ने सबसे ज्यादा नुकसान जनजातीय समाज को पहुंचाया। 2014 में देश के करीब 125 जिले माओवादी और नक्सली हिंसा से प्रभावित थे। हर साल हजारों लोगों और आदिवासियों की जान जाती थी।

उन्होंने आरोप लगाया कि पिछली सरकारों ने इस समस्या पर ध्यान नहीं दिया। नक्सली गरीब परिवारों के बच्चों और बेटियों को उठा ले जाते थे। हमने नक्सलवाद-माओवाद को खत्म किया। इससे अब आदिवासी महिलाओं और परिवारों में सुरक्षा का भरोसा बढ़ा है।

प्रधानमंत्री रविवार को महाराष्ट्र के गढ़चिरौली में आयोजित कार्यक्रम में वर्चुअली शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने जनजातीय समुदाय के लोगों से बातचीत की। प्रधानमंत्री ने 3 हजार करोड़ रूपए के प्रोजेक्ट्स का उद्घाटन और शिलान्यास किया। साथ ही मिजोरम में ट्राइबल फ्रीडम फाइटर म्यूजियम का उद्घाटन भी किया। प्रधानमंत्री मोदी, राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू और उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन ने दिल्ली में बिरसा मुंडा को श्रद्धांजलि दी। इस दौरान



आदिवासी कलाकारों ने डांस की प्रस्तुति दी। प्रधानमंत्री ने कलाकारों के साथ खरताल भी बजाई। सरकार ने 2021 में बिरसा जयंती को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने का ऐलान किया था। प्रधानमंत्री मोदी 2023 में बिरसा की जन्मस्थली उलिहातू (खूंटी, झारखंड) गए थे। वे उलिहातू का दौरा करने वाले देश के पहले प्रधानमंत्री हैं।

आदिवासी नायकों के सम्मान में भी सियासी टकराव, भाजपा ने कांग्रेस को घेरा

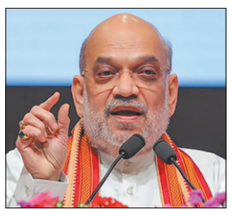
बिरसा मुंडा की 151वीं जयंती के अवसर पर देशभर में उन्हें याद किया जा रहा है, लेकिन इस बीच भाजपा और कांग्रेस के बीच राजनीतिक बयानबाजी तेज हो गई है। भाजपा ने रविवार को कांग्रेस पार्टी और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी पर आदिवासी नायकों का अपमान करने और उनसे नफरत करने का आरोप लगाया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर भाजपा प्रवक्ता प्रदीप भंडारी ने कांग्रेस नेतृत्व पर सीधा निशाना साधा। उन्होंने दावा किया कि राहुल गांधी और पूरे गांधी-वाड्रा परिवार ने संसद में भगवान बिरसा मुंडा को श्रद्धांजलि नहीं दी। भंडारी ने कहा, राहुल गांधी और कांग्रेस आदिवासी नायकों से नफरत करते हैं। कांग्रेस आदिवासी-विरोधी है।

साथ ही भंडारी ने पुरानी घटनाओं का जिक्र करते हुए सोनिया गांधी पर भी टिप्पणी की। प्रदीप भंडारी ने कहा कि पहले भी सोनिया गांधी ने भारत की राष्ट्रपति, जो आदिवासी समुदाय से आती हैं, को बेचारी महिला कहकर संबोधित किया था। प्रदीप भंडारी ने राहुल गांधी के हैदराबाद दौरे का मुद्दा भी उठाया। उन्होंने आरोप लगाया कि राहुल गांधी के पास जॉर्ज सोरोस इकोसिस्टम से जुड़े भारत समिट में शामिल होने के लिए समय है, लेकिन देश के महान आदिवासी नायक भगवान बिरसा मुंडा को सम्मान देने के लिए समय नहीं है।

उन्होंने सवाल किया कि क्या कांग्रेस नेता के लिए विदेशी विचारधारा से जुड़े कार्यक्रम देश के नायकों से ज्यादा महत्वपूर्ण हो गए हैं। भाजपा का यह बयान ऐसे समय में आया है जब रविवार को संसद भवन परिसर स्थित प्रेरणा स्थल पर भगवान बिरसा मुंडा की 151वीं जयंती के मौके पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और कई केंद्रीय मंत्रियों ने बिरसा मुंडा की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें नमन किया। गौरतलब है कि केंद्र सरकार ने साल 2021 में 15 नवंबर, यानी बिरसा मुंडा की जयंती को हर साल जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की थी। इसका मुख्य उद्देश्य देश की आजादी में आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदानों को याद करना और राष्ट्र निर्माण में आदिवासी समुदायों के योगदान को सम्मान देना है।

राहुल पर अमित शाह का हमला, बोले- देश को बदनाम करना बंद करें

पुणे (एजेंसी)। केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री अमित शाह ने रविवार को कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर निशाना साधा। उन्होंने आरोप लगाया कि राहुल गांधी अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भारत, उसके लोकतांत्रिक संस्थानों और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकास कार्यों को बदनाम कर रहे हैं। शाह ने कहा कि राहुल गांधी को समझना चाहिए कि अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत को बदनाम करने से उन्हें सत्ता नहीं मिलेगी। उन्होंने कहा कि अगर राहुल गांधी सत्ता में वापस आना चाहते हैं, तो उन्हें विदेश जाना बंद करना होगा। उन्हें भारत के गांवों में जाना शुरू करना चाहिए। अमित शाह ने कहा, मैं राहुल गांधी जी को एक सलाह देना चाहता हूं। इस तरह अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत को बदनाम करके आपको सत्ता नहीं मिलेगी। अगर आपको सत्ता चाहिए, तो विदेश यात्राएं बंद कीजिए और भारत के गांवों में जाना शुरू कीजिए। तब शायद किसी दिन आपका मौका आ सकता है। अमित शाह पुणे में राष्ट्रीय भारी इंजीनियरिंग सहकारी क्षेत्र को फिर से खड़ा करने की पहल की आधारशिला रखने पहुंचे थे। इस दौरान उन्होंने कांग्रेस पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस लगातार चुनाव हार रही है। इसी निराशा में पार्टी अंतरराष्ट्रीय मंचों पर देश और उसके नेतृत्व को निशाना बना रही है। शाह ने 13 और 14 नवंबर को हैदराबाद में हुए भारत सम्मेलन पर भी तंज कसा। इस कार्यक्रम का आयोजन कांग्रेस के नेतृत्व वाली तेलंगाना सरकार ने किया था। उन्होंने कहा कि इसमें देश और विदेश से वामपंथी विचारधारा को बढ़ावा देने वाले लोगों को बुलाया गया था। अमित शाह ने कहा, कांग्रेस के युवराज (राहुल गांधी का जिक्र करते हुए) भी 'भारत सम्मेलन' में शामिल हुए। यहां उन्होंने भारत विरोधी विचार रखकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश को बदनाम किया। उन्हें समझना चाहिए कि अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत को बदनाम करने से उन्हें सत्ता नहीं मिलेगी। केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं से भी अपील की। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ताओं को अपनी पार्टी के नेतृत्व से चुनावी प्रदर्शन पर सवाल पूछने चाहिए। शाह ने चेतावनी दी कि अगर कांग्रेस इसी राजनीतिक तरीके पर चलती रही, तो उसे अगले 30 साल तक सत्ता से बाहर रहना पड़ सकता है।



जनजातीय गौरव दिवस पर मुख्यमंत्री ने गिनाई तीन साल की उपलब्धियां

जनजातीय समाज की संस्कृति, विरासत और महापुरुषों को मिलेगा सम्मान : भजनलाल

जयपुर (कासं)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि जनजातीय समाज ने देश की संस्कृति, परम्परा और स्वाभिमान की रक्षा के लिए सदियों तक संघर्ष किया है। इस समाज के गौरवशाली इतिहास, समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और महापुरुषों के बलिदान को सम्मान देना हम सभी का दायित्व है। राज्य सरकार वंचितों को वरीयता देते हुए जनजातीय समाज के शैक्षणिक, सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तीकरण के लिए प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है।





मुख्यमंत्री ने रविवार को जनजातीय गौरव दिवस पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सम्बोधन को सुना। इसके बाद मुख्यमंत्री ने जनजातीय समुदाय के प्रतिनिधियों से संवाद भी किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री द्वारा वर्ष 2021 से धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की जयंती पर शुरू किया गया जनजातीय गौरव दिवस आज राष्ट्रीय चेतना का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। वहीं, जनजातीय समाज के महानायकों के योगदान को राष्ट्रीय पहचान और सम्मान मिल रहा है। इसी क्रम में जनजातीय समुदाय से आने वाली द्रौपदी मुर्मू आज राष्ट्रपति के रूप में देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद आसीन हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' संकल्प के तहत जनजातीय क्षेत्रों में विकास की गति बढ़ाने के साथ नक्सलवाद को समाप्त करने के लिए व्यापक प्रयास किए गए हैं। वहीं, पीएम-जनमन के माध्यम से जनजातीय समूहों तक बिजली, पानी, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा, पोषण और सड़क जैसी मूलभूत सुविधाएं पहुंचाई जा रही हैं। इसी प्रकार धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के माध्यम से विकास की पहुंच दूरस्थ और वंचित जनजातीय क्षेत्रों तक सुनिश्चित की जा रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि डबल इंजन की सरकार ने तीन वर्षों में जनजातीय समुदाय के विकास के लिए लगभग 3 हजार 200 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। इसी क्रम में 10 आश्रम छात्रावास, 3 आवासीय विद्यालय, एक नया खेल छात्रावास और 250 नए मां-बाड़ी केन्द्र खोले गए हैं। पीएम-जनमन योजना के तहत बारां जिले के सहरिया क्षेत्र में 15 हजार 233 आवासों, 23 सम्पर्क सड़कों, 15 नए बहुद्देश्यीय केन्द्रों का निर्माण और 51 वन-धन केन्द्र गठित किए गए हैं। वहीं, धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के माध्यम से प्रदेश के 6 हजार 235 गांवों के लगभग 55 लाख जनजातीय लोगों के जीवन स्तर में सुधार के प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि जनजातीय किसानों को सशक्त बनाने के लिए निशुल्क संकर मक्का बीज मिनी किट कार्यक्रम के तहत 25 लाख से अधिक मिनी किट बांटे गए हैं। वहीं, 3 लाख 50 हजार से अधिक निशुल्क हाइब्रिड सब्जी बीज मिनी किट उपलब्ध करवाए गए हैं। इसी प्रकार पीएम कुसुम योजना में 8 लाख से अधिक निशुल्क सोलर पम्प स्थापित किए गए हैं।

संस्कृति, परम्परा और विरासत का संरक्षण- मुख्यमंत्री ने कहा कि जनजातीय समाज की अमूल्य सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए सौंध माटी आदि धरोहर प्रलेखन योजना शुरू की गई है। वहीं, जनजातीय महानायकों को उचित सम्मान देने के लिए डूंगरपुर में डूंगर बरंडा और बांसवाड़ा में बांसिया चारपोटा के स्मारकों का निर्माण करवाया जा रहा है। उदयपुर में वीर बालिका कालीबाई संग्रहालय का निर्माण भी किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जनजातीय समाज की आस्था और परम्पराओं से जुड़े धार्मिक स्थलों के विकास पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इसके तहत बारां के सीताबाड़ी, उदयपुर के कमलनाथ महादेव, जावर माता मंदिर एवं रामकुंडा महादेव मंदिर, सलूम्बर के सोनार माता मंदिर तथा बांसवाड़ा के सलाकेश्वर महादेव मंदिर का विकास किया जा रहा है। इन प्रयासों से जनजातीय समाज की सांस्कृतिक पहचान और परम्पराओं को नई पहचान मिल रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जनजातीय युवाओं ने खेलों के क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा और क्षमता का परिचय देते हुए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का गौरव बढ़ाया है। लैक्रोस में प्रदेश के जनजातीय खिलाड़ियों ने वर्ष 2024 में समरकंद एशियन चैम्पियनशिप में रजत पदक प्राप्त किया। वहीं, इस वर्ष रियाद एशियन लैक्रोस गेम्स में पुरुष एवं महिला दोनों श्रेणियों में स्वर्ण पदक हासिल किए गए। इसी प्रकार मलेशिया में आयोजित दक्षिण-पूर्व एशियाई लैक्रोस चैम्पियनशिप-2026 में कांस्य पदक प्राप्त किया। ये उपलब्धियां जनजातीय युवाओं की प्रतिभा, परिश्रम और सामर्थ्य का परिचायक हैं। कार्यक्रम के दौरान 'परम्परा से प्रगति की ओर विकास यात्रा' और जनजातीय क्षेत्रों के आस्था केन्द्रों पर आधारित लघु फिल्मों का प्रदर्शन भी किया गया। इस अवसर पर जनजाति क्षेत्र विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी, विधायक फूल सिंह मीणा, महेंद्रपाल मीणा, अतिरिक्त मुख्य सचिव कुंजी लाल मीणा सहित बड़ी संख्या में जनजातीय समाज के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

अमिताभ के घर फायरिंग की प्लानिंग, 2 शूटर अरेस्ट

अमृतसर (एजेंसी)। अमिताभ बच्चन के घर फायरिंग करने की प्लानिंग के आरोप में दिल्ली पुलिस ने दो शॉर्पशूटर्स को अरेस्ट किया है। इनमें जालंधर का रहने वाला विकास ठाकुर और तरनतारन का निवासी दीपक सिंह शामिल हैं। दोनों विदेश में बैठे एक गैंगस्टर के लिए काम करते हैं। पुलिस सूत्रों के मुताबिक, गैंगस्टर 1984 के सिख दंगों पर अमिताभ के कथित बयान को लेकर उन्हें निशाना बनाना चाहता था। हालांकि, अमिताभ ने ऐसा कोई बयान देने से इनकार किया है।

पुलिस के मुताबिक, विकास दिल्ली के एक कारोबारी पर रंगदारी के लिए फायरिंग करने आया था। वहीं, दीपक 3 अक्टूबर को अमृतसर में इंस्टाग्राम इन्फ्लुएंसर मैड संधू की हत्या के मामले में वांटेड था। दीपक सिंह अमृतसर में 3 अक्टूबर को हुई इंस्टाग्राम इन्फ्लुएंसर मैड संधू की हत्या के मामले में वांटेड था। इस मामले में उसके साथ शामिल पलविंदर सिंह उर्फ काका को पंजाब पुलिस



पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। पुलिस पूछताछ में पता चला कि दीपक को मुंबई में ज्यादा समय तक रुकने के लिए कहा गया था। उसे अमिताभ बच्चन के घर के बाहर फायरिंग करनी थी। पुलिस के मुताबिक, गैंगस्टर 1984 के सिख विरोधी दंगों पर अमिताभ के कथित बयान को लेकर उन्हें निशाना बनाना चाहता था। हालांकि, अमिताभ ने ऐसा कोई बयान देने से इनकार किया है।

दिल्ली पुलिस के डिप्टी कमिश्नर नारा चैतन्य के मुताबिक, विकास ठाकुर जालंधर के न्यू गांधी नगर का रहने वाला है। उसे मुंबई से दिल्ली भेजा गया था। यहां उसे एक कारोबारी से रंगदारी मांगने के लिए उसके ऊपर फायरिंग करनी थी। इस हमले में दीपक सिंह को भी शामिल होना था, लेकिन पुलिस ने वारदात से पहले ही विकास को गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद मुंबई में कार्रवाई कर दीपक को भी पकड़ लिया।

कुछ सिख संगठनों और 1984 के दंगों की गवाह जगदीश कौर ने आरोप लगाया था कि 31 अक्टूबर 1984 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के बाद दिल्ली के एम्स अस्पताल के बाहर अमिताभ बच्चन ने भीड़ को उकसाया था। शिकायतकर्ताओं का दावा था कि अमिताभ ने दूरदर्शन के लाइव प्रसारण के दौरान हाथ उठाकर 'खून का बदला खून' और 'खून के छींटे सिखों के घरों तक पहुंचने चाहिए' जैसे नारे लगाए थे। हालांकि, इस कथित प्रसारण का कोई आधिकारिक वीडियो अब तक सार्वजनिक नहीं हुआ है।

राकांपा के विलय की चर्चा पर विराम, फिर भी संजय राउत की बयानबाजी जारी

मुंबई (एजेंसी)। राकांपा के दोनों गुटों के विलय की संभावनाओं पर भले ही दोनों दलों के नेता बार-बार विराम लगा रहे हों, लेकिन इस मुद्दे को लेकर सबसे ज्यादा बेचैनी शिवसेना (यूबीटी) में दिखाई दे रही है। राकांपा (शरदचंद्र पवार) की सांसद सुप्रिया सुले और महाराष्ट्र की उप मुख्यमंत्री सुनेत्रा पवार विलय की चर्चाओं को खारिज कर चुकी हैं। इसके बावजूद शिवसेना (यूबीटी) के सांसद संजय राउत लगातार इस मुद्दे पर बयान दे रहे हैं। उनके बयानों और पार्टी के मुखपत्र 'सामना' के संपादकीय से लगता है कि शिवसेना (यूबीटी) को शरद पवार के पाला बदलने और विपक्षी गठबंधन से दूर जाने की आशंका सता रही है। यदि राकांपा (शरदचंद्र पवार) राजग की ओर जाती है तो इसका असर महाराष्ट्र में विपक्षी गठबंधन की ताकत और समीकरणों पर पड़ सकता है। संभवत: यही वजह है कि दोनों राकांपा गुटों के नेता जहां विलय की चर्चाओं को विराम देने में जुटे हैं, वहीं शिवसेना (यूबीटी) बार-बार यह बताने में लगी है कि शरद पवार भाजपा के साथ नहीं जाएंगे। हाल ही में सुप्रिया सुले ने स्पष्ट किया कि उनके भाई और पूर्व उप मुख्यमंत्री अजीत पवार के जीवित रहते दोनों राकांपा गुटों के विलय पर चर्चा हुई थी। इसके लिए एक तारीख भी तय की गई थी, लेकिन 28 जनवरी को विमान दुर्घटना में अजीत पवार के निधन के साथ ही उनके लिए और उनकी पार्टी के भीतर यह चर्चा समाप्त हो गई। उन्होंने यह भी कहा कि अजीत पवार गुट की ओर से विलय के संबंध में न तो उन्हें कोई फोन आया है और न ही संदेश। सुले ने भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन (राजग) में शामिल होने की संभावनाओं को भी सिरे से खारिज किया। इससे पहले राकांपा के प्रदेश अध्यक्ष सुनील तटकरे भी साफ कर चुके हैं कि उनकी पार्टी में शरद पवार गुट के साथ विलय को लेकर किसी स्तर पर कोई चर्चा नहीं हो रही है।

दैनिक लोकजीवन
जयपुर एवं भीलवाड़ा से एक साथ प्रकाशित
संपादक - स्व. डॉ. विनयकुमार जी तिवारी

परंपरा के नाम पर पर्यावरण से खिलवाड़ कब तक?

आंकड़ों की बात करें तो वर्ष 2022 में प्रदेश में दीपावली के समय आगजनी के पचास से अधिक हादसे हुए जिनमें कई घर जल गए और करोड़ों की संपत्ति नष्ट हुई। प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और अग्निशमन विभाग की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2023 में केवल तीन दिनों में प्रदेश में 72 अग्निकांड हुए जिनमें से अधिकांश पटाखों की चिंगारी से शुरू हुए थे। पटाखों के उपयोग से वायु प्रदूषण भी हिमाचल के वातावरण को गंभीर रूप से प्रभावित करता है। सामान्य दिनों में यहां की हवा शुद्ध और स्वच्छ होती है, परंतु दीपावली के समय वायु गुणवत्ता सूचकांक खतरनाक स्तर तक पहुंच जाता है। शिमला में 2024 की दीपावली के बाद एक्यूआई 148 तक पहुंच गया था, जो सामान्य स्तर से लगभग दोगुना था। वर्ष 2025 की दीपावली के बाद की अखबार के पहले पन्ने की खबर ही पटाखों से जलने वाले भवनों पर आधारित थी, जिसमें 45 भवन प्रदेश में आग की आगोश में आ गए तथा एक ही रात में लगभग ढेड़ करोड़ रुपए की संपत्ति स्वाहा हो गई। वहीं प्रदेश में एक्यूआई की स्थिति भी गंभीर बताई गई। इसके अतिरिक्त पटाखों से निकलने वाली गैसें व धातुएं फेफड़ों और श्वसन तंत्र के लिए अत्यंत हानिकारक बताई जाती हैं, जिसका प्रभाव बच्चों, बुजुर्गों तथा अस्थमा के रोगियों के लिए जानलेवा साबित माना जाता है। इसके साथ-साथ ध्वनि प्रदूषण भी मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर विपरीत असर डालता है। पटाखों का शोर कभी-कभी 140 डेसिबल तक पहुंच जाता है, जो न केवल मनुष्य बल्कि पशु-पक्षियों के लिए भी असहनीय होता है। पटाखों से उत्पन्न चिंगारी केवल बस्तियों तक सीमित नहीं रहती बल्कि जंगलों तक फैल जाती है। हिमाचल के चीड़ के जंगल अत्यधिक ज्वलनशील होते हैं। दीपावली के समय इन जंगलों में आग लगने की घटनाएं आम हैं। वन विभाग के अनुसार हर वर्ष दीपावली के आसपास लगभग 150 से 200 हेक्टेयर वन क्षेत्र जलकर नष्ट हो जाता है। यह केवल पेड़ों की हानि नहीं बल्कि जैव विविधता के विनाश का भी कारण है। हालांकि सरकार और न्यायपालिका समय-समय पर इस बाबत प्रयासरत है, किंतु इनका क्रियान्वयन अभी तक चुनौती बना हुआ है।

राष्ट्रीय हरित अधिकरण ने प्रदेश में पर्यावरण-अनुकूल पटाखे निश्चित समय सीमा में जलाने के नियम बनाए हैं। साथ ही स्कूलों तथा सामाजिक स्थलों में हरित दीपावली अभियान के तहत जागरूकता फैलाने का काम किया जाता आ रहा है। परंतु इन आदेशों का पालन व्यवहार में बहुत सीमित दिखाई देता है। पर्व की खुशी में नियमों की अनदेखी आम बात बन गई है, जिसमें समाज के जिम्मेदार नागरिक भी कभी-कभी सोशल मीडिया पर पटाखे जलाते हुए दिखते हैं। देखा-देखी में आतिशबाजी की मानो होड़ सी लग जाती है। इसमें मीडिया, सामाजिक संगठन तथा सोशल मीडिया इंफ्लूएन्सर के जनजागरूकता बढ़ाने में खासे प्रयत्न देखने को भी मिलते हैं। किन्तु जब तक हरेक व्यक्ति अपनी अंतरात्मा से सजग व समझदार नहीं बनता, तब तक सभी प्रयत्न धरे के धरे रह जाएंगे। समाचारपत्र और टीवी चैनलों पर दीपावली के बाद प्रदूषण और आगजनी पर खबरें भी प्रकाशित होती हैं, लेकिन शायद इनसानी फितरत है कि 'जब तक मेरी बारी नहीं आती तब तक मैं तो सुरक्षित हूं' वाली सोच इन प्रयत्नों को अमलीजामा नहीं पहना सकती। ऐसी मानसिकता व्यक्ति के स्वयं के साथ समाज के लिए भी घातक है। यद्यपि कई व्यक्तिगत एवं संस्थागत प्रयास भी सराहनीय हैं जिसमें 'धुएं नहीं, दीयों की दीपावली' तथा 'एक दीप धरती मां के नाम' जैसी पहलें समाज को पर्यावरण-मित्र उत्सव की दिशा में अपने आप में अतुलनीय कदम है। यदि जरूरत है तो उपरोक्त प्रयासों में कदम से कदम मिलाने की।

इसके अलावा अब हरित दीपावली की अवधारणा जो केवल मात्र कागजों तक सीमित है, को व्यापक रूप से व्यावहारिकता में अपनाने का उपयुक्त समय है। मिट्टी के दीयों, प्राकृतिक तेलों और सौर ऊर्जा आधारित रोशनी का उपयोग किया जाना इस ओर एक और सार्थक प्रयास सिद्ध हो सकता है। इसके साथ-साथ सामूहिक दीपदान और सांस्कृतिक कार्यक्रम पटाखों के विकल्प हो सकते हैं। इन उपायों के बावजूद वास्तविक परिवर्तन तभी संभव होगा जब समाज की मानसिकता बदलेगी। हमें यह समझना होगा कि पर्व का उद्देश्य प्रतिस्पर्धा या प्रदर्शन नहीं, बल्कि आनंद और आत्मिक संतुलन है। दीपावली के सच्चे अर्थ में 'प्रकाश' तभी होगा जब वह किसी के जीवन में अंधकार न फैलाए। एक दीया यदि हमारे घर में शांति और सौहार्द का संदेश दे सकता है तो सैकड़ों पटाखों की आवश्यकता नहीं होती। हिमाचल की सुंदरता, इसकी स्वच्छ हवा और हरियाली हमारी सांस्कृतिक पूंजी है। इसे सुरक्षित रखना होगा। हमारे देश में दीपावली केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक उत्सव है। यह अवसर अंधकार पर प्रकाश और बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है, लेकिन आधुनिक समय में इस पर्व का स्वरूप अत्यधिक भौतिकतावादी और उपभोगवादी हो गया है। पारंपरिक दीयों और दीपदान की जगह वर्तमान में पटाखों की चमक-दमक, शोरगुल और धुआं ले चुका है। दीपावली के इस आधुनिक स्वरूप से न केवल पर्यावरणीय संकट गहराया है, बल्कि आगजनी की घटनाओं में भी साल दर साल वृद्धि हुई है।

डिजिटल एकाधिकार पर अंकुश और यूज़र के अधिकारों की रक्षा जरूरी

मेटा द्वारा विभिन्न प्रकार के अधिग्रहण और अन्य व्यावसायिक गतिविधियों के कारण अलग-अलग देशों में सोशल मीडिया के क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा लगभग समाप्त हो गई है। खास तौर पर फेसबुक द्वारा इंस्टाग्राम और व्हाटसएप के अधिग्रहण के बाद सोशल मीडिया में मेटा का एकछत्र राज्य स्थापित हो चुका है। अब तक यह स्पष्ट हो चुका है कि मेटा कंपनी यूजर डाटा को ट्रेक करते हुए लक्षित विज्ञापन भी करती है।

- ललित शर्मा -

मेटा का कहना है कि व्हाट्सएप द्वारा भेजे गए संदेश एंड टू एंड एन्क्रिप्टिड, यानी एक सिरे से दूसरे सिरे तक गुप्त होते हैं, यानी सिर्फ वही व्यक्ति जिसे आप मैसेज भेज रहे हैं, वही आपके मैसेज पढ़ सकते हैं। इसके साथ ही आपकी वॉइस कॉल और वीडियो कॉल भी एंड टू एंड एन्क्रिप्टिड होती है। अब जब भारत सरकार संगीन अपराधों के लिए व्हाट्सएप से जानकारी मांगती है तो एंड टू एंड एनक्रिप्शन यानी निजता का हवाला देकर, व्हाट्सएप उससे बचना चाहता है।

एक ओर जहां मेटा कंपनी ऊंचे आदर्शों का दंभ भरते हुए भारत सरकार के नियमों को मानने से यह कहकर इंकार कर रही है कि इससे उसकी एंड टू एंड इंक्रिप्शन समाप्त हो जाएगी और यह उनकी वैश्विक स्तर वैशिष्ट्य है, जिसके लिए व्हाट्सएप दुनिया में जानी जाती है, वहीं दूसरी ओर यह कंपनी यूजर्स का डाटा बिना उनकी अनुमति के अन्य लोगों को कीमत के बदले उपलब्ध कराती रहती है। यूजर्स डाटा को बेचने की प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए कंपनी ने अपनी प्राइवेसी नीति में भी बदलाव किया है। इस बदलाव के साथ मेटा ने स्वयं को अधिकृत किया कि वो अन्य मेटा कंपनियों के साथ उनका डेटा साझा कर सकती है। 2021 में किए गए बदलाव में यह प्रावधान था कि जो ग्राहक ऐसा नहीं चाहते, वे उनकी सेवा छोड़ सकते हैं। मेटा का यह भी कहना था कि इससे उसकी सेवाओं में पारदर्शिता बढ़ी है। बाद में भारत की नियामक संस्था कंपीटीशन कमीशन ऑफ इंडिया (सीसीआई) ने कहा कि यह बदलाव कि यदि उन्हें डाटा साझा करना स्वीकार नहीं तो वे मेटा सेवा छोड़ सकते हैं, अनुचित है। आयोग ने कहा कि यह डेटा साझा करना व्हाट्सएप सेवाओं के उपलब्ध कराने से संबद्ध नहीं है और उसने मेटा पर 213 करोड रुपए से अधिक का जुर्माना लगाया और उसके बदलाव को रोक कर उपभोक्ताओं के चयन के अधिकार को बहाल किया। इतिहास में ऐसे कई उदाहरण हैं जिसमें मेटा कंपनी ने ग्राहकों की निजी जानकारियों का अनुचित उपयोग किया। कैंब्रिज एनालेटिका घोटाले में फेसबुक के लाखों यूजर्स का डाटा किसी तीसरी एप के माध्यम से लेकर उसका राजनीतिक दुरुपयोग किया गया। इन लाखों यूजर्स ने अपने इस डाटा का उपयोग करने के लिए अनुमति नहीं दी थी। 2019 में अमरीका के फेडरल ट्रेड कमीशन ने निजता हनन के लिए फेसबुक पर 5 अरब डालर का जुर्माना लगाया। 2021 में फ्रांसिस हॉगन ने इंस्टाग्राम के आंतरिक दस्तावेजों का खुलासा करते हुए इंस्टाग्राम के किशोरों के मानसिक और अन्य प्रकार से स्वास्थ्य पर पडने वाले दुष्प्रभावों के बारे में बताया और यह साबित किया कि मेटा कंपनी का इस बाबत रुख गैर-जिम्मेदाराना रहा। 2018 में संयुक्त राष्ट्र के फैक्ट फाइंडिंग मिशन द्वारा यह बताया गया कि फेसबुक सामाजिक घृणा फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन कर रहा है। बे-रोकटोक सोशल मीडिया के माध्यम से इस प्रकार की घृणा फैलने के कितने दुष्परिणाम होते हैं, यह उसका उदाहरण है। म्यांमार में फेसबुक पर सोशल मीडिया पोस्टों ने एक अल्पसंख्यक समुदाय के खिलाफ घृणा का वातावरण तैयार किया।

मेटा द्वारा विभिन्न प्रकार के अधिग्रहण और अन्य व्यावसायिक गतिविधियों के कारण अलग-अलग देशों में सोशल मीडिया के क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा लगभग समाप्त हो गई है। खास तौर पर फेसबुक द्वारा इंस्टाग्राम और व्हाटसएप के अधिग्रहण के बाद सोशल मीडिया में मेटा का एकछत्र राज्य स्थापित हो चुका है। अब तक यह स्पष्ट हो चुका है कि मेटा कंपनी यूजर डाटा को ट्रेक करते हुए लक्षित विज्ञापन भी करती है। व्हाटसएप के माध्यम से मेटा कंपनी गलत जानकारियां प्रसारित करने का काम करती है और ऐसा देखा गया है कि व्हाट्सएप पर फैली अफवाहों की वजह से दंगे, उत्पीडन की गतिविधियां तो होती ही हैं, और तथाकथित एंड टू एंड एनक्रिप्शन की वजह से यह पता नहीं चल पाता कि गलत सूचनाओं का स्रोत क्या है? वैश्विक डिजिटल इकोसिस्टम पर मेटा का लगभग एकाधिकार है।

रोजाना 3.5 अरब से ज्यादा सक्रिय यूजर्स इसके विभिन्न ऐप्स पर मौजूद हैं। फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप और थ्रेड्स को एक साथ जोडकर, मेटा कंपनी संचार के प्रमुख माध्यमों को नियंत्रित करती है। अकेले फेसबुक और इंस्टाग्राम का भारत में कुल सोशल मीडिया वेब ट्रैफिक में 70 प्रतिशत से ज्यादा हिस्सा है। मेटा का डिजिटल विज्ञापन नेटवर्क, डेटा इकट्ठा करने की प्रक्रिया और सार्वजनिक सूचनाओं के प्रवाह पर भारी नियंत्रण है। सामान्य तौर पर सरकारें सोशल मीडिया कंपनियों के कुकृत्यों के बाद ही उन पर अंकुश लगाने की बात सोचती हैं, लेकिन तब तक भारी नुकसान हो जाता है। उदाहरण के लिए इस बात का आभास होते ही कि सोशल मीडिया प्लेटफार्म प्रदर्शन को अधिक महत्व दे रहे हैं, नेपाल में, सितंबर 2025 में फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप और यूट्यूब सहित 26 सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

पिछले कुछ वर्षों में दुनिया ने कई देशों में सत्ता परिवर्तन देखे हैं, जिनमें बांग्लादेश, श्रीलंका और नेपाल प्रमुख हैं। इन देशों में हुए सत्ता परिवर्तनों में एक बात समान थी- सार्वजनिक विरोध-प्रदर्शन, जिन्हें सोशल मीडिया के जरिए और हवा मिली। इन देशों में नागरिकों को उद्वेलित करने मे सोशल मीडिया ने अहम भूमिका निभाई। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि सोशल मीडिया के एल्गोरिदम ने इन चर्चाओं को और तेज कर दिया। श्रीलंका में, इन विरोध-प्रदर्शनों के कारण अंततः राष्ट्रपति गोटाबाया राजपक्षे को इस्तीफा देना पड़ा। बांग्लादेश में, चुनी हुई प्रधानमंत्री शेख हसीना को देश छोडकर भागना पड़ा। नेपाल का 'जेन-जी' आंदोलन भी इससे कुछ अलग नहीं था। वहां भी, सोशल मीडिया ने खराब शासन, भ्रष्टाचार, राजनीतिक जवाबदेही और बेरोजगारी से जुड़ी चर्चाओं को बढ़ावा दिया। नेपाल में, युवा प्रदर्शनकारियों को एकजुट करने और सूचनाएं फैलाने में सोशल मीडिया ने बड़ी भूमिका निभाई। साथ ही इसका इस्तेमाल आधिकारिक बयानों को चुनौती देने के लिए भी किया गया। यह आंदोलन सितंबर 2025 में प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली के इस्तीफे के साथ समाप्त हुआ। आज बड़ी चिंता यह है कि जहां सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म अपनी तकनीक का इस्तेमाल सरकारों को जवाबदेह ठहराने के लिए करते हैं, वहीं इन प्लेटफॉर्म्स की खुद की जवाबदेही तय करने के लिए कोई तंत्र मौजूद नहीं है। यहां तक कि जब इन प्लेटफॉर्म्स का गलत आचरण सामने आता है, तब भी उनके खिलाफ कोई सख्त कार्रवाई करना संभव नहीं होता। भारत सरकार के पास इनफॉरमेशन टेक्नोलॉजी (इंटरमीडियरी गाईडलाईंस एंड डिजिटल मीडिया एथिक्स कोड) नियमावली 2021 के अंतर्गत नियम 4 (2) के तहत राष्ट्रीय सुरक्षा, संप्रभुता, सार्वजनिक व्यवस्था (पब्लिक ऑर्डर) और यौन अपराधों या बच्चों के यौन शोषण से संबद्ध कुछ संगीन अपराधों के संदर्भ में यह अधिकार है कि संदेश के प्रारंभ कर्ता की पहचान कर सके और अपराधियों को दंड दे सके। नियम में यह भी प्रावधान है कि ऐसा तब किया जाएगा जब कम सख्त तरीके प्रभावी सिद्ध नहीं हो पाएं।

गौरतलब है कि विदेशी सोशल मीडिया प्लेटफार्म निजता के नाम पर नियमों को भी मानने से इंकार करते हैं। न्यायालय में सुनवाई के दौरान एक बार फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप आदि सोशल मीडिया कंपनी 'मेटा' के प्रमुख मार्क जुकरबर्ग ने बयान दिया था, कि यदि उन्हें एंड टू एंड एन्क्रिप्शन समाप्त करने के लिए बाध्य किया जाएगा तो वह भारत से निकल जाएंगे।

गोवर्धन में गूंजे कृष्ण भक्ति के सुर, अष्टछाप की विरासत को मिला संगीतमय सम्मान

जयपुर (कासं)। राजस्थान की समृद्ध आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं संगीत परंपरा को पुनर्जीवित करने की दिशा में गोवर्धन परिक्रमा मार्ग स्थित देवस्थान विभाग राजस्थान के श्री वनबिहारी मंदिर पर कदमखंडी, जतीपुरा में अष्टछाप के महान संत-कवि एवं संगीतज्ञ अष्टसखा गोविंद स्वामी की बैठक पर भव्य संगीत महोत्सव का आयोजन किया गया। 'कृष्ण सखा गोविंद स्वामी जी - रसिक अनन्यनि को पथ बाँको' शीर्षक से आयोजित इस विशेष कार्यक्रम में अष्टछाप के महान कवियों के पदों का शास्त्रीय संगीत के प्रतिष्ठित रागों में भावपूर्ण गायन किया गया। विशेष रूप से अष्टसखा गोविंद स्वामी के चुनिंदा पदों की संगीतमय प्रस्तुतियों ने उपस्थित श्रद्धालुओं एवं संगीतप्रेमियों को भावविभोर कर दिया।

अष्टसखा गोविंद स्वामी राजस्थान की सांस्कृतिक, कृष्ण भक्ति एवं ब्रज परंपरा के महान संवाहक संत-कवि एवं संगीतज्ञ थे। उनका जन्म राजस्थान के भरतपुर जिले के अटारी गांव में हुआ था। उन्होंने अपनी विलक्षण काव्य प्रतिभा और संगीत साधना के माध्यम से श्रीकृष्ण भक्ति को जन-जन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्हें राधा के भाई श्रीदामा का अवतार माना जाता है । ब्रजभाषा में उनके द्वारा रचित 600 से अधिक पद उनकी आध्यात्मिक अनुभूति, काव्य प्रतिभा और संगीत साधना के परिचायक हैं। उनकी रचनाओं में श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं, मधुर भावों, स्वरूप सौंदर्य और दिव्य लीलाओं का अत्यंत भावपूर्ण चित्रण मिलता है।

गोवर्धन की पावन भूमि पर स्थित उनकी बैठक आज भी उनकी साधना और भक्ति परंपरा की स्मृति को संजोए हुए है।

अष्टछाप की परंपरा भारतीय भक्ति साहित्य, संगीत और कृष्णभक्ति की अत्यंत समृद्ध विरासत है। इस परंपरा के आठ महान कवि-संगीतज्ञों को अष्टछाप कहा जाता है। वैष्णव मान्यता के अनुसार द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण के अंतरंग सखाओं की भांति कलियुग में श्रीनाथजी की सेवा और लीला-स्मरण के लिए इन महान भक्तों का प्राकट्य हुआ। गोवर्धन पर्वत पर श्रीनाथजी के प्राकट्य और



उनकी सेवा-पूजा की परंपरा के साथ इन कवियों ने अपने पदों, कीर्तनों और संगीत के माध्यम से कृष्णभक्ति को जन-जन तक पहुंचाया। महाप्रभु वल्लभाचार्य एवं गोस्वामी विट्ठलनाथ जी ने इन आठ महान कवियों को श्रीनाथजी की अष्टयाम सेवा से जोड़ा। इनमें सूरदास, कुंभनदास, परमानंददास, कृष्णदास, गोविंद स्वामी, नंददास, चतुर्भुजदास एवं छीतस्वामी सम्मिलित हैं। इनकी रचनाओं ने हिंदी साहित्य के भक्तिकाल को समृद्ध करने के साथ भारतीय संगीत और पुष्टिमार्गीय कीर्तन परंपरा को भी विशिष्ट पहचान प्रदान की। इन महान कवियों ने श्रीनाथजी की सेवा करते हुए अपनी काव्य प्रतिभा, संगीत साधना और अनन्य भक्ति से एक ऐसा आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण किया, जिसकी गूंज आज भी ब्रजभूमि में सुनाई देती है। गोवर्धन परिक्रमा मार्ग पर स्थित इनकी बैठकें इस गौरवशाली परंपरा की जीवंत स्मृतियां हैं।

कार्यक्रम का आयोजन ब्रज संस्कृति संगीत समिति, वृंदावन के तत्वावधान में अष्टसखा गोविंद स्वामी शोध संस्थान के सहयोग से शास्त्रीय संगीतज्ञ ब्रज रसिक मधुकरजी के संयोजन में किया गया। उल्लेखनीय है कि अष्टसखा गोविंद स्वामी शोध संस्थान अष्टछाप के कवियों, उनके साहित्य, संगीत और आध्यात्मिक योगदान पर शोध एवं अनुसंधान के कार्य में सक्रिय है। कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि गोविंद स्वामी के चुनिंदा पदों का पारंपरिक शास्त्रीय संगीत के प्रतिष्ठित रागों में सस्वर गायन किया गया। हवेली संगीत, शास्त्रीय गायन एवं कथक की सांगीतिक और भावपूर्ण प्रस्तुतियों के माध्यम से अष्टछाप की परंपरा को अभिव्यक्ति दी गई। पूरी संगीत मंडली ने अपनी सुरमयी प्रस्तुतियों से गोविंद स्वामी की भक्ति, काव्य और संगीत साधना को जीवंत कर दिया। उपस्थित श्रद्धालु पदगायन के दौरान कृष्णभक्ति के भाव में सराबोर दिखाई दिए।

इस अवसर पर देवस्थान विभाग राजस्थान के वनबिहारी मंदिर के पुजारी नंदलाल शर्मा ने आयोजन के प्रति प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि कदमखंडी स्थित गोविंद स्वामी की बैठक में इस प्रकार का विशिष्ट संगीत आयोजन पहली बार हुआ है। उन्होंने ऐसे आयोजनों को ब्रज की प्राचीन धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और प्रचार-प्रसार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बताया। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा भी इस अद्भुत आयोजन के लिए शुभकामना संदेश प्रेषित किया गया ।

कार्यक्रम में अष्टसखा गोविंद स्वामी शोध संस्थान के संस्थापक एवं संरक्षक, प्रख्यात भागवताचार्य पंडित योगेंद्र कृष्ण शास्त्री जी महाराज के मंगलकामना संदेश के साथ उनकी टीम ने सहभागिता की। इस अवसर पर अष्टसखा गोविंद स्वामी की वंश परम्परा के कीर्तनकार डॉ भगवान मकरंद (कामवन), जयपुर से वरिष्ठ साहित्यकार रामानंद राठी, डॉ. योगेश कुमार शर्मा, सुशांति फाउंडेशन की संस्थापक राधे राधे पुष्पाजी तथा वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी डॉ. गोवर्धन लाल शर्मा सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे । इनके अतिरिक्त अष्टछाप साहित्य, ब्रज संस्कृति और कृष्णभक्ति में रुचि रखने वाले सैकड़ों श्रद्धालु एवं भक्तजन कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का लाइव प्रसारण भी किया गया, जिससे देश-विदेश के कृष्णभक्त इस आध्यात्मिक आयोजन से जुड़ सके। इस अवसर पर अष्टसखा गोविंद स्वामी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित एवं डॉ गोवर्धन लाल शर्मा द्वारा सम्पादित एक सुंदर रंगीन लघु पुस्तिका 'अष्टछाप : श्रीकृष्ण के अष्टसखा' का भी विमोचन हुआ, जिसे सभी श्रद्धालुओं को निशुल्क वितरित किया गया ।

विविधता में एकता का आधार है आपसी सम्मान

भारत की पहचान उसकी सांस्कृतिक विविधता और लोकतांत्रिक मूल्यों से है। यहां अलग-अलग भाषाएं बोलने वाले, विभिन्न परंपराओं का पालन करने वाले और भिन्न शारीरिक बनावट वाले लोग एक साझा राष्ट्रीय पहचान के साथ रहते हैं। इसके बावजूद किसी व्यक्ति को उसके चेहरे, रंग, भाषा या क्षेत्रीय पहचान के कारण अपमानित करने की घटनाएं बताती हैं कि सामाजिक समानता का संवैधानिक आदर्श अभी पूरी तरह व्यवहार में नहीं उतर पाया है। दिल्ली में त्रिपुरा के एक युवक के साथ कथित नस्लीय दुर्व्यवहार का हालिया मामला इसी समस्या को सामने लाता है। अक्टूबर 2026 में सोशल मीडिया पर प्रसारित वीडियो के बाद दिल्ली पुलिस ने संबंधित कंटेंट क्रिएटर को गिरफ्तार किया। मामले में आरोपों की न्यायिक पुष्टि होना अभी अलग विषय है, लेकिन इस घटना ने पूर्वोत्तर के लोगों के प्रति पूर्वाग्रह और लोकप्रियता के लिए अपमानजनक सामग्री बनाने की प्रवृत्ति पर गंभीर प्रश्न खड़े किए हैं।

केंद्रीय मंत्री किरण रिजिजू ने भी इसके खिलाफ कड़ा संज्ञान किया है कि आखिर पूर्वोतर लोगों के साथ ऐसा क्यों होता है। भेदभाव की समस्या केवल व्यक्तिगत व्यवहार तक सीमित नहीं रहती, बल्कि धीरे-धीरे सामाजिक सोच और संस्थागत व्यवस्थाओं में भी जगह बना लेती है। किसी व्यक्ति की भाषा, पहनावे, खानपान अथवा क्षेत्रीय पहचान के आधार पर उसके प्रति धारणा बनाना संकीर्ण मानसिकता का परिचायक है। भारत जैसे विविधताओं वाले देश में इस प्रकार की सोच राष्ट्रीय एकता की भावना को कमजोर कर सकती है। पूर्वोत्तर के राज्यों की संस्कृति, परंपराएं और जीवनशैली भारतीय समाज की समृद्ध विरासत का अभिन्न हिस्सा हैं। वहां के नागरिकों को मुख्यधारा से अलग समझना या उनके साथ बाहरी व्यक्ति जैसा व्यवहार करना दुर्भाग्यपूर्ण है।

शिक्षण संस्थानों, कार्यस्थलों और सार्वजनिक स्थानों पर इस विषय में विशेष संवेदनशीलता की आवश्यकता है। स्कूलों और कॉलेजों में विद्यार्थियों को संविधान के मूल्यों, समानता और मानवीय गरिमा के प्रति जागरूक किया जाना चाहिए। केवल कानून बना देने से भेदभाव समाप्त नहीं होता, बल्कि इसके लिए सामाजिक व्यवहार में बदलाव लाना भी जरूरी है। परिवारों की भूमिका भी इसमें महत्वपूर्ण है, क्योंकि बच्चों की सोच और व्यवहार का निर्माण सबसे पहले घर से ही होता है।

सोशल मीडिया कंपनियों की भी जिम्मेदारी है कि वे ऐसी सामग्री के विरुद्ध प्रभावी शिकायत व्यवस्था विकसित करें, जो किसी व्यक्ति की गरिमा को ठेस पहुंचाती हो या समुदायों के प्रति घृणा फैलाती हो। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लोकप्रियता हासिल करने की होड़ में मानवीय संवेदनाओं की अनदेखी नहीं की जानी चाहिए। वहीं उपयोगकर्ताओं को भी किसी अपमानजनक वीडियो को लाइक, शेयर और प्रचारित करने से पहले उसके सामाजिक प्रभाव पर विचार करना चाहिए। किसी की बेइज्जती को मनोरंजन मान लेना हमारी सामूहिक संवेदनशीलता पर प्रश्नचिह्न लगाता है।

लोकतंत्र की मजबूती केवल चुनाव, कानून और संस्थाओं से नहीं, बल्कि नागरिकों के आपसी सम्मान से भी तय होती है। मार्टिन लूथर किंग और रोजा पार्क्स का संघर्ष हमें यही सिखाता है कि समानता केवल पुस्तकों में लिखे आदर्शों से स्थापित नहीं होती, बल्कि उसके लिए समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी समझनी पड़ती है। भारत की एकता और अखंडता तभी मजबूत होगी, जब देश के किसी भी हिस्से में रहने वाला नागरिक स्वयं को समान रूप से सुरक्षित, सम्मानित और स्वीकार्य महसूस करेगा। विविधता का सम्मान करना ही भारतीय लोकतंत्र और हमारी साझा सांस्कृतिक पहचान की वास्तविक शक्ति है।

सोशल मीडिया ने आम लोगों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर दिया है, लेकिन व्यूज और फॉलोअर्स की प्रतिस्पर्धा में कुछ लोग दूसरों की गरिमा को मनोरंजन का साधन बना लेते हैं। किसी व्यक्ति की आंखों, नाक, रंग या भाषा का मजाक उड़ाकर वीडियो बनाना केवल हास्य का प्रश्न नहीं है।

ऐसी सामग्री से संबंधित व्यक्ति की प्रतिष्ठा और मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित हो सकते हैं। किसी वीडियो को मजाक या स्क्रिप्टेड बताने से उसके नैतिक पहलुओं का प्रश्न समाप्त नहीं हो जाता। साथ ही किसी वायरल वीडियो के आधार पर बिना जांच के किसी को दोषी ठहराना भी उचित नहीं है। आवश्यकता ऐसी डिजिटल संस्कृति की है, जिसमें स्वतंत्र अभिव्यक्ति के साथ दूसरों के सम्मान और निजता का भी ध्यान रखा जाए। भारत में पूर्वोत्तर के नागरिकों के विरुद्ध भेदभाव की समस्या नई नहीं है। वर्ष 2014 में अरुणाचल प्रदेश के 19 वर्षीय छात्र नीडो तानिया की दिल्ली में मृत्यु ने पूरे देश को झकझोर दिया था। लाजपत नगर में उनके रूप-रंग और हेयरस्टाइल का मजाक उड़ाए जाने के बाद विवाद बढ़ा और उनके साथ मारपीट हुई। अगले दिन उनकी मृत्यु हो गई। वर्ष 2019 में इस मामले में चार लोगों को दोषी ठहराया गया। दिसंबर 2025 में त्रिपुरा के छात्र अंजेल चकमा की देहरादून में हमले के बाद मृत्यु ने भी चिंता बढ़ाई। उनके परिवार ने नस्लीय टिप्पणियों का आरोप लगाया था, हालांकि इस पहलू पर अलग-अलग दावे सामने आए। इन घटनाओं से स्पष्ट है कि प्रत्येक नागरिक की सुरक्षा और गरिमा सुनिश्चित करना शासन और समाज दोनों की जिम्मेदारी है। भारतीय संविधान इस विषय पर स्पष्ट आधार प्रदान करता है। अनुच्छेद 14 कानून के समक्ष समानता और कानूनों के समान संरक्षण की गारंटी देता है। अनुच्छेद 15 कुछ निर्दिष्ट आधारों पर भेदभाव को प्रतिबंधित करता है, जबकि अनुच्छेद 21 जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा करता है। अनुच्छेद 19 अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सहित कुछ मौलिक स्वतंत्रताएं प्रदान करता है, जो संवैधानिक प्रतिबंधों के अधीन हैं। अनुच्छेद 51 नागरिकों का मूल कर्तव्य बताता है कि वे धार्मिक, भाषाई और क्षेत्रीय विविधताओं से ऊपर उठकर सद्भाव तथा भाईचारे की भावना को बढ़ावा दें। फिर भी संविधान में समानता का प्रावधान होना और समाज में समानता स्थापित होना दो अलग बातें हैं।

विश्व इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जब महान व्यक्तित्वों को भेदभाव का सामना करना पड़ा और उन्होंने अपने अधिकारों के लिए लंबा संघर्ष किया। अमरीका के नागरिक अधिकार आंदोलन के प्रमुख नेता मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने नस्लीय भेदभाव के विरुद्ध अहिंसक संघर्ष का नेतृत्व किया। बीसवीं शताब्दी के मध्य में अमरीका के अश्वेत नागरिकों को सार्वजनिक परिवहन, विद्यालयों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर नस्लीय अलगाव का सामना करना पड़ता था। वर्ष 1963 में वाशिंगटन में दिए गए उनके ऐतिहासिक भाषण ने समानता और न्याय की मांग को व्यापक पहचान दिलाई। उन्हें धमकियों और गिरफ्तारियों का सामना करना पड़ा।

वर्ष 1964 में उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार मिला, लेकिन 1968 में उनकी हत्या कर दी गई। उनका संघर्ष बताता है कि भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठाना केवल किसी एक समुदाय का मुद्दा नहीं, बल्कि पूरे लोकतंत्र की विश्वसनीयता का प्रश्न है। रोजा पार्क्स का उदाहरण भी महत्वपूर्ण है। दिसंबर 1955 में अमरीका के मोंटगोमरी शहर में उन्होंने बस में एक श्वेत यात्री के लिए अपनी सीट छोडने से इनकार कर दिया। उस समय सार्वजनिक परिवहन में नस्लीय अलगाव लागू था। उनकी गिरफ्तारी के बाद मोंटगोमरी बस बहिष्कार आंदोलन शुरू हुआ, जिसने नागरिक अधिकार आंदोलन को नई दिशा दी। रोजा पार्क्स के कदम ने दिखाया कि अन्यायपूर्ण व्यवस्था को चुनौती देने के लिए किसी बड़े पद या शक्ति की आवश्यकता नहीं होती। एक नागरिक का साहस भी व्यापक सामाजिक परिवर्तन की शुरुआत बन सकता है।

दक्षिण अफ्रीका में नेल्सन मंडेला ने रंगभेद की व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष किया। इस व्यवस्था में अश्वेत बहुसंख्यक आबादी को राजनीतिक अधिकारों और सार्वजनिक जीवन में गंभीर असमानताओं का सामना करना पड़ता था। मंडेला ने 27 वर्ष जेल में बिताए। वर्ष 1990 में उनकी रिहाई हुई और 1994 में वे दक्षिण अफ्रीका के पहले अश्वेत राष्ट्रपति बने, जिन्हें लोकतांत्रिक चुनाव में चुना गया था। उन्होंने राजनीतिक परिवर्तन के बाद राष्ट्रीय मेल-मिलाप पर भी जोर दिया। उनका अनुभव बताता है कि भेदभावपूर्ण व्यवस्था को बदलने के लिए संघर्ष के साथ न्यायपूर्ण संस्थाओं और राजनीतिक इच्छाशक्ति की भी आवश्यकता होती है।

ब्रिटेन में स्टीफन लॉरेंस का मामला नस्लीय हिंसा और न्यायिक जवाबदेही का महत्वपूर्ण उदाहरण है। वर्ष 1993 में 18 वर्षीय अश्वेत युवक की लंदन में नस्लीय हमले के दौरान हत्या कर दी

घरेलू लेप से डालें बालों में नई जान

इस मौसम में बालों को अतिरिक्त देखभाल की जरूरत होती है। इसके लिए पार्लर जाने की जरूरत नहीं है। घर में नारियल, क्रीम और केले की मदद से केश लेप (हेयर मास्क) बनाएं। एक विशेषज्ञ की राय है कि इनसे बनें लेप रूखे-बेजान और कमजोर बालों के लिए अच्छे हैं। स्टार सैलून एंड स्पा की मालकिन आशमीन मुंजाल ने घर में बनाए जाने वाले कुछ ऐसे ही केश लेप बताए हैं :-



नारियल और क्रीम लेप

यह लेप सूखे और घुंघराले बालों के लिए सर्वश्रेष्ठ है। इसके मॉश्चराइज करने वाले तत्व बालों को मुलायम और चमकदार बनाते हैं। यह घर में आसानी से बनाया जा सकता है।

सामग्री - नारियल तेल और जैतून तेल।

विधि - दोनों तेलों को अच्छे से मिलाएं और बालों की जड़ों से अंतिम सिरे तक लगाएं। लगाने के बाद बालों को टोपी से पूरी तरह ढंक लें। एक घंटे तक लगा रहने दें। उसके बाद शैंपू कर लें और कंडिशनर लगाएं। इस लेप से न केवल बाल मुलायम और चमकदार बनेंगे, बल्कि रूखे बालों को पोषण भी मिलेगा।

केला क्रीम लेप

यह लेप कमजोर और रूखे-सूखे बालों में नई जान डालेगा। केला एक प्राकृतिक संघटक है, जो जड़ों को नुकसान से बचाकर बालों को मजबूती देता है। केले में मौजूद आयरन और विटामिन बालों को पोषण देते हैं।

सामग्री - एक केला और एक चम्मच शहद।

विधि - पका हुआ एक केला ग्राइंडर में अच्छे से पींस लें। उसके बाद उसमें एक चम्मच शहद डालें। इस पूरे घोल को जड से सिरों त क



लगाएं। 15-20 मिनट तक लगा रहने दें और बाद में गुनगुने पानी से धो लें। इस लेप को आगे प्रयोग करने के लिए फ्रिज में रखा जा सकता है। यह जल्दी खराब नहीं होता।

जई से बना केश मास्क

यह लेप सिर की तैलीय चमड़ी, रूसी, खुजली और जलन से जूझने वाले लोगों के लिए बेहतरीन है।

सामग्री - एक चम्मच जई, एक चम्मच दूध और एक चम्मच बादाम का तेल।

विधि - उपरोक्त चीजों को मिलाएं और लेप बना लें। लेप में कोई गांठ नहीं रहनी चाहिए। बालों में अच्छे से लगाएं। 15-20 मिनट लगा रहने दें और बाद में गुनगुने पानी से धो लें।

हाइबिस्कस (गुडहल फूल) केश लेप

अगर आप कमजोर जड़ों और पतले बालों की समस्या से ग्रस्त हैं, तो यह लेप आपके लिए आदर्श है। इसके जरूरी तत्व बालों की ज़डों को मजबूती देते हैं।

सामग्री - गुडहल की 6-7 पंत्तियां, एक चौथाई कप जैतून का तेल और दो चम्मच कच्चा दूध।

विधि - गुडहल की पत्तियां रातभर पानी में भिगोएं। सुबह में जैतून तेल और कच्चे दूध के साथ पीस लें। इसे बालों पर लगाएं। इसे 20-25 मिनट लगाए रखें और बाद में ठंडे पानी से धो लें।

सात फेरों की मजबूती बत्तीस वचनों से

पवित्र अग्नि को साक्षी मानकर लिए गए सात फेरे जिंदगी का अहम हिस्सा होते हैं, जिसमें प्यार, संयम, समझदारी के साथ जिंदगी भर साथ निभाने का वादा होता है, इसलिए अगर आप भी विवाह के पवित्र बंधन में बंधने जा रहे हैं तो इन 32 वचनों का खास ध्यान रखें ताकि रिश्तों में नयापन, प्यार और विश्वास ताउम्र बना रहे। हमेशा से ही सात नंबर को आध्यात्मिकता से परिपूर्ण और चिरायु प्रदान करने वाली संख्या माना जाता रहा है, क्यों कि सात नंबर अपने अंदर बड़े गूढ़, आध्यात्मिक दर्शन और पारलौकिक अर्थ छिपाए हुए हैं। इस पुण्य संख्या के साथ ही जुडी है सप्तपदी यानि दो आत्माओं के मिलन के लिए मांगी गई ईश्वरीय स्वीकृति। इस रीति के बिना विवाह संपन्न नहीं हो सकता क्यों कि जब तक वर-वधू ये सात कदम नहीं चलते, विवाह अधूरा ही रहता है। सप्तपदी ही एक ऐसी रस्म है जहां साथ रखे हर कदम के साथ वर-वधू एक-दूसरे से सात जन्म तक का साथ साथ निभाने का वादा करते हैं, पर आज के बदलते परिवेश में ये सात वचन कब टूट जाते हैं पता ही नहीं चलता, इसलिए अगर आप चाहते हैं कि सात जन्मों का साथ वाकई सात जन्मों तक बना रहे तो सात फेरों के साथ जरूरी है इन बातों का ख्याल रखना ताकि आपके रिश्तों में प्यार की मिठास और खुशियां बनी रहे-

1- दाम्पत्य की अटूट कडी है विश्वास और विश्वास पर ही पति-पत्नी का रिश्ता टिका होता है, इसलिए इसमें शक न लाएं क्योंकि अगर यह एक बार आ जाता है तो पूरी जिंदगी लग जाती है टूटी कडी जोडने में, इसलिए जरूरी है कि विश्वास की नींव हिलने न दें बल्कि इतनी मजबूत बनाएं कि प्रचंड आंधी भी इसे हिला न सके।

2-विवाह के बाद अपनी गृहस्थी, बचत व निवेश की योजनाएं बनाएं और इसके साथ फैमिली प्लानिंग भी करके चलें ताकि अनचाहे गर्भ से बचा जा सके और अपनी सुविधानुसार फैमिली बढाई जा सके।

3-कोई इंसान परफेक्ट नही होता है, इसलिए एक-दूसरे में गलतियां न निकालें बल्कि गलतियों को सुधारने का मौका दें। अपने प्यार में इतनी ताकत लाएं कि सामने वाला अपनी कमियों को आपके कहे बिना ही सुधार लें।

4-उनकी पसंद के अनुरूप कार्य करें, मतलब ये नियम अपनाएं जो तुमको हो पसंद वही बात कहेगें फिर चाहे वह टीवी देखने का हो या फिर घूमने का, उनकी पसंद को अपनी पसंद बनाएं।

5-अगर पार्टनर खर्चीली प्रवृत्ति वाला है तो कोशिश करें कि खर्चे की सफाई ना मांगे, क्यों कि उनके अपने भी खर्चे होते हैं जिन्हें पूछना व बताना, झगड़े को बढ़ावा देने जैसा होता है, क्यों कि खर्चे करने का हक दोनों का होता है।

6-एक-दूसरे को सरप्राइज जरूर दें। पर झटके वाले ना हों, मतलब जिससे आपका बजट ना बिगड़े और पार्टनर भी सरप्राइज देखकर खुश हो जाए।

7-आप चाहें कितने भी व्यस्त क्यों ना हों, पर एक-दूसरे को समय जरूर दें क्यों कि कई बार समय की कमीं के कारण रिश्ते बिखरने लगते हैं, इसलिए अपने पार्टनर के लिए समय जरूर निकालें।

8-रिश्ते में एक-दूसरे के घर की कमियां जरूर गिनाई जाती हैं, इसलिए ऐसे समय पर बुराई तो करें पर बुराई को झगड़े का रूप ना दें।

9-गलती होने पर माफी जरूर मांगे, क्यों कि सॉरी कहना बुरी बात नहीं है और ना ही माफ करना मुश्किल काम है,साथ ही माफी मांगने से झगड़ा आगे नहीं बढ़ता, इसलिए माफी मांगने में कंजूसी ना करें।

10-कहते हैं रिश्ते में स्पेस जरूरी होता है क्यों कि दूरी से प्यार झलकता है। इसलिए अपने रिश्ते में थोडी दूरी बनाए रखें ताकि आपको उनकी कमी का एहसास हो।

11-सेक्स दाम्पत्य की धुरी है इसलिए एसे अनदेखा ना करें और हर रोज इसमें कुछ नया करने की कोशिश करें। पर जो भी क्रिया करें उसमें पार्टनर की सहमति जरूर होनी चाहिए।

12-अपने पार्टनर के लिए हमेशा ईमानदार रहें और कोई भी ऐसी बात ना छुपाएं जो बाद में पता चलने पर दिल को ठेस पहुंचाए।

13-घर का फैसला हो या फिर अपने लिए कोई भी फैसला अकेले ना लें, बल्कि एक,दूसरे के सलाह-मशविरा लेकर ही फैसला करें।

14- कहते हैं कि खुशियां हमारे आस-पास ही होती हैं,बस उन्हें ढूंढने की जरूरत होती है इसलिए जीवन के हर पल में खुशियां ढूंढे।

15-पति-पत्नि का रिश्ता एक दूसरे के लिए समर्पित होता है,इसलिए अगर आपको लगता है कि आपके पार्टनर व घर के लोगों की जिसमें खुशी है वो आपसे ही पूरी हो सकती है तो उसके लिए कुर्बानी देने में जरा भी संकोच ना करें।

16-अपने साथी की खूबियों की तारीफ करें और इस तारीफ को हो सके तो घर वालों के सामने भी कहें। इससे आत्मविश्वास बढ़ता है।

17-थैंक्यू शब्द जादू का काम करता है, इसलिए अगर आपके पार्टनर ने आपके घर व आपके लिए कुछ किया है तो थैंक्यू जरूर कहें। आपके द्वारा कहा गया थैंक्यू उनको कितनी खुशी देगा उसका अंदाजा आप नहीं लगा सकते।

18- कभी-कभी हार मान लेना गलत नहीं होता है, इसलिए अगर आपकी गलती नही है तो भी हार मान लें। आपका ये व्यवहार देखकर वो आपके आभारी हो जाएंगे।

19-अगर किसी बात को लेकर बहस हो रही है तो उस बात का बतंगड़ ना बनाएं बल्कि तुरन्त खत्म करने की काशिश करें।

20-माना आपकी शादी हो गई है और आप चाहते हैं कि आपका साथी हमेशा आपके साथ रहे तो इस जिद को छोड़े और उन्हें दोस्तों के साथ घूमने का मौका भी दें।

21-अगर आपका किसी बात पर झगड़ा हो गया है तो बिस्तर पर जाने से पहले झगडे को खत्म कर लें ताकि बिस्तर पर बातें हों तो सिर्फ प्यार की।

22-शादी के बाद अगर आपके साथी का कोई शौक पूरा नहीं हो पाया है तो उसे पूरा करने का मौका व सहयोग दें और उसके शौक व रूचियों को बरकरार रखें। शौक को पूरा करने में मददगार बनें न



कि दीवार।

23-अगर आपकी कोई फरमाइश है तो उसे साथी को बताएं ना कि फरमाइशों को चाय के प्याले के साथ परोसें।

24-शादी के बाद डेटिंग जैसी चीजों को खत्म ना करें बल्कि मौका मिलते ही डेटिंग पर जाएं ताकि पुरानी यादें ताजा हो सकें।

25-आई लव यू ये तीन शब्द सारे गुस्से और झगडे को खत्म कर देता है इसलिए इसे कहने से ना चूकें।

26-अगर आपके पार्टनर ने कुछ नया किया है तो उसे कॉम्पलीमेंट जरूर दें,उससे उसका हौसला बढता है।,

27-माना ईगो इंसानी व्यक्तित्व का गुण है,जो समाज में आपकी पहचान के साथ अपने आप विकसित होने लगता है, पर इसका मतलब ये नहीं कि रिश्ते में ईगो लाएं।

28-आपसी तालमेल के दौरान हमेशा अदब व शिष्टाचार रखें। कभी भी अपशब्द का इस्तेमाल ना करें। तर्क-वितर्क करते समय आपा ना खोएं।

29-बार-बार अपने पार्टनर को छोड देने की धमकी ना दें,इससे रिश्ते की डोर कमजोर होती है। 30-आमतौर पर ये माना जाता है कि शादी के बाद प्रेम और परिपक्व हो जाता है,इसलिए प्रेम को और बढाए ना कि कम होने दें।

31-एक -दूसरे को सम्मान दें, क्यों कि आपके द्वारा दिया गया सम्मान तीसरे की नजर में भी आता है, इसलिए गरिमा बनाए रखें।

32-विवाहित जीवन का भविष्य बनाने के लिए जरूरी है कि दोनों एक-दूसरे के प्रशंसनीय पक्ष पर ध्यान दें। आपके वैवाहिक जीवन की गाडी बिना रू कावट के चलती रहे इसके लिए जरूरी है कि इन अहम सूत्रों को सात फेरों के साथ जरूर निभाएं ताकि दाम्पत्य जीवन में खुशियां बनी रहें।

जिम्मेदारी को निभाएं



पति या पत्नी में से किसी भी एक के वर्किंग आवर्स ज्यादा होने से उनके रिलेशन में दूरियां आने लगती हैं। प्रोफेशनल और पर्सनल लाइफ में बैलेंस कर पाना मुश्किल हो जाता है। डॉ. खालिदा दुधाले, रिलेशनशिप एक्सपर्स हमें बता रही हैं ऐसे ही कुछ टिप्स जो रिश्तों में बढ़ती दूरियों को कम करने और बिजी शेड्यूल में जॉयफुल लाइफ बिताने में हो सकती हैं कारगर।

मैरिड लाइफ में कम समय के कारण अक्सर जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं। कौन घर का काम करेगा, कौन बाहर का। कौन बच्चों की पढ़ाई करवाएगा और कौन रिश्तेदारी निभाएगा। पति या पत्नी दोनों में से किसी भी एक के वर्किंग आवर्स ज्यादा होने पर ऐसी सिचुएशन अक्सर लड़ाई-झगड़ों का कारण बन जाती है। क्या करें- आप प्लानिंग बनाकर काम करें। काम को अपने-अपने फ्री टाइम के अनुसार बांट लें। पति के पास समय अधिक है तो वह घर के काम करने में अपनी बेइज्जती बिलकुल न समझें।

शक की गुंजाइश न रखें



अक्सर पति या पत्नी में से किसी भी एक का लंबे समय बाहर रहना कई तरह की शंकाओं को जन्म दे देता है। बाकी आग में घी काम हमारे कुछ दोस्त या पड़ोसी कर देते हैं। हम नेगेटिव होकर वह सारी बातें सोचने लगते हैं, जितना सच्चाई से कोई लेना देना नहीं होता। कलीग्स को लेकर भी प्रॉब्लम्स बढ़ने लगती है। क्या करें - पार्टनर पर आप जितना विश्वास करेंगे वह उतना ही आपके प्रति ईमानदार रहेगा। अपने कलीग्स की तुलना लाइफ पार्टनर से बिल्कुल भी न करें।

सामाजिक बने रहें

टाइम कम होने की वजह से सोशल लाइफ एकदम से खत्म होने लगती है। पति या पत्नी अकेले किसी फंक्शन में जाकर शर्मिंदा महसूस करते हैं। कई बार अकेले आने पर लोगों के ताने भी उन्हें परेशान करते हैं। कई बार अच्छे पोजिशन पर बैठे लाइफ पार्टनर की तारीफ भी पति या पत्नी में हीन भावना पैदा करती है। क्या करें- आप अपने जीवनसाथी पर भरोसा करें। उसकी बिजी लाइफ को लोगों को समझाने की कोशिश करें। कोई उनकी तारीफ करे तो उससे चिढ़ने के बजाय अपना वैल्यू एडिशन दें।

लकड़ी की कंघी का इस्तेमाल और पाऐं लाभ

लकड़ी कि कंघियों का अस्तित्व कई सदियों से है। उन दिनों स्त्रियाँ लकड़ी की लुभावनी एवं प्राकृतिक कंघियों का प्रयोग किया करती थी और, यकीन मानिए, उनकी बालों की समस्याएं उतनी नहीं थी जितनी आज-कल हैं।



- लकड़ी की कंघी का इस्तेमाल आपकी बाल-झड़ने कि समस्या से लेकर रूसी से छुटकारा पाने तक में सहायक है। ऐसा माना जाता है कि यह साधारण-सी लकड़ी की कंघियाँ सिर में रक्त-संचार को सुधार कर सिर-दर्द से छुटकारा दिलाने में मददगार हैं।
- इसीलिए, इन सब लाभों को ध्यान में रखकर, आप भी मनभावन दिखने वाली प्लास्टिक कि कंघी को ना कह दें और अपनी लटें संवारने के लिए एक छोटी-सी लकड़ी की कंघी का चुनाव करें। आइये इस बदलाव की वज़ह पर एक नज़र डालते हैं।
- सिर के लिए लाभकारी लकड़ी की कंघी सिर के लिए लाभकारी है क्योंकि बालों को कंघी करते हुए उत्पन्न हुई ऊष्मा सिर में रक्त-संचार को सुधारने में सहायक होती है।
- बालों को कोई नुक्सान नहीं पहुंचाती लकड़ी की कंघी आपके बालों के लिए अति-उत्तम है। यह बालों को कोई नुक्सान नहीं पहुंचाती। विशेषज्ञों का कहना है कि गीले-बाल कंघी करने के लिए भी लकड़ी कि कंघी सर्वोत्तम है क्योंकि यह बालों को सहजता से टूटने नहीं देती है।
- रूसी का निवारण अगर आपकी रूसी का कारण खोपड़ी का रूखापन है तो चिंता मत करिए लकड़ी की कंघी का इस्तेमाल करने से आपकी खोपड़ी में तेल-निर्माण की प्रक्रिया सामान्य हो जायेगी और रूसी को मिटा देगी।
- घने-बाल लकड़ी की कंघी आपके बालों को घना करती है । यह विद्युत-कुचालक है और किसी प्रकार का कोई भी विद्युतीय-ऋण उत्पन्न ना कर पाने के कारण आपके बालों का घनत्व बढ़ाती है।
- बाल-कंडीशनर अगर आपकी बाल लम्बे हैं तो लकड़ी की कंघी आपके लिए ही है। यह तेल को बालों की पूरी लम्बाई पर समान रूप से वितरित करती है, जोकि आपकी जुल्फों के लिए एक प्राकृतिक-कंडीशनर का कार्य करता है। इसके फलस्वरूप बाल चमकीले दिखते हैं।
- संवेदनशील खोपड़ी के लिए सर्वोत्तम यह कंघियाँ प्लास्टिक एवं धातु से बनी कंघियों की तुलना में नर्म होती है और संवेदनशील खोपड़ी को रगड़ और खरोंच के नुक्सान से बचाने में अत्यंत उपयोगी हैं।

रेशमी जुल्फें चाहती हैं तो खाएं पौष्टिक आहार



पानी हमारे हर बाल का चौथाई हिस्सा पानी होता हैअगर आप समुचित मात्रा में पानी नहीं पिएंगी तो बालों के सिरे टूटने लगेंगे और बाल रूखे-सूखे हो जाएंगे। इसलिए जरूरी है कि रोजाना कम से कम दस गिलास पानी जरूर पिएं। स्ट्रेड, पॉल्यूशन और अल्ट्रावायलेट किरणों से बालों को होने वाले फ्री रैडिकल डैमेज से बादाम बेहतरीन तरीके से बचा सकता है।

नारी के सौन्दर्य में बालों की भी खूब चर्चा की गई है। कभी बालों को काली घटा तो कभी नागिनसी लहराती जुल्फें कहा गया है। यह सच भी है कि बाल आपके व्यक्तित्व का भी अहम हिस्सा होते हैं। यदि स्वस्थ और सुन्दर बाल हों तो हर किसी की निगाहें टिके बिना नहीं रह सकतीं। घने और चमकदार बाल सबका मन मोह लेते हैं। बालों को ऊपर से ही नहीं अन्दर से भी मजबूती की आवश्यकता होती है। बालों की मजबूती निर्भर करती है आपके खान-पान पर, इसलिए जरूरी है कि अपने खाने में पोष्क तत्व शामिल करें। पानी हमारे हर बाल का चौथाई हिस्सा पानी होता है अगर आप समुचित मात्रा में पानी नहीं पिएंगी तो बालों के सिरे टूटने लगेंगे और बाल रूखे-सूखे हो जाएंगे। इसलिए जरूरी है कि रोजाना कम से कम दस गिलास पानी जरूर पिएं। बादाम में हैल्दी एंटीऑक्सीडेंट विटामि-ई प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। स्ट्रेड, पॉल्यूशन और अल्ट्रावायलेट किरणों से बालों को होने वाले फ्री रैडिकल डैमेज से बादाम बेहतरीन तरीके से बचा सकता हे। इनके सेवन से खोपडी में ब्लड सर्कुलेशन भी सही होता है। अमरूदो में विटामिन सी भरपूर मात्रा में पाया जाता है। यह बालोंको दोमुंहा होने से बचाता है। अमरूद, आयरन के अवशोषण में भी सहायक होता है। जो बालों की सेहत के लिए एक महत्वपूर्ण न्यूट्रिएंट है। खजूर आयरन से भरपूर होते हैं। आयरन की कमी सेबालों के टूटने, झडने की समस्या हो सकती है। बालों की मजबूती के लिए समुचित मात्रा में खजूर, किशमिश, जामुन, आंवला, और हरी पत्तेदार सब्जियाँ का नियमित सेवन करें। अण्डा सल्फर का महत्तपूर्ण स्त्रोत है। सल्फर युक्त खाने करने से बाल बेहद सुन्दर स्वस्थ हो जाते हैं। एक अण्डें में दो चम्मच ब्रांडी मिलाकर शैम्पू के बाद बालों पर लगा लें। यह अच्छा कंडीशनर है। मछली प्रोटीन के सबसे हैल्दी स्त्रोतों में शुमार है।



इससे बाल सेल्स की ग्रोथ के लिए आवश्यक अमीनो एसिड्स मिलता है। मछलियों में ओमेगा-3 प्रचुर मात्रा में मिलता है जो बालों को ना सिर्फ स्मूद और बाउंसी बनाता है बल्कि रूखेपन से भी बचाता है। आपको फिश खाना पसंद नहीं है तो फिश ऑयल सप्लीमेंट का सेवन कर सकती हैं। सोयाबीन इसमें एक खास अमीनों अम्ल लाइजीन पाया जाता है, जो शरीर में सभी प्रकार के प्रोटींस के लिए जरूरी बिल्डिंग ब्लॉक है। लाइजीन से फेरिटीन आयरन की उत्पत्ति भी होती है, जो बालों की ग्रोथ के लिए जरूरी है।



ऑपरेशन त्रिनेत्र : हिस्ट्रीशीटर की आलीशान कोठी, कार और ट्रैक्टर जब्त

राजस्थान और मध्यप्रदेश में हत्या, हत्या के प्रयास, आर्म्स एक्ट एवं एनडीपीएस एक्ट के 19 आपराधिक प्रकरण दर्ज



जयपुर (कासं)। प्रतापगढ़ जिला पुलिस ने मादक पदार्थ तस्करों की अवैध संपत्तियों के विरुद्ध कार्रवाई करते हुए ऑपरेशन त्रिनेत्र के तहत हिस्ट्रीशीटर वसीम खान की करीब 1 करोड़ 25 लाख रुपये की चल-अचल संपत्ति फ्रीज की है। फ्रीज की गई संपत्तियों में गांव देवल्दी स्थित आलीशान मकान, एक केटा कार और जॉन डियर कंपनी का ट्रैक्टर शामिल है। आरोपी के विरुद्ध राजस्थान और मध्यप्रदेश में मादक पदार्थ तस्करी सहित विभिन्न गंभीर अपराधों के कुल 19 प्रकरण दर्ज हैं।

जिला पुलिस अधीक्षक प्रतापगढ़ विशाल जांगिड़ के निर्देशन में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक जयदेव सियाग एवं पुलिस उप अधीक्षक अरनोद चन्द्रशेखर पालीवाल के मार्गदर्शन में यह कार्रवाई की गई। अवैध मादक पदार्थों की तस्करी से अर्जित संपत्तियों को फ्रीज करने के अभियान के तहत थाना अरनोद पुलिस ने एनडीपीएस एक्ट की धारा 68एफ(1) के अंतर्गत प्रस्ताव तैयार कर संबंधित दस्तावेज भारत सरकार की अधिकृत सक्षम प्राधिकारी एवं प्रशासक, सफेमा (एफओपी) एवं एनडीपीएस एक्ट, नई दिल्ली को भेजे थे। सक्षम प्राधिकारी ने 13 नवम्बर 2026 को फ्रीजिंग आदेश को अनुमोदित कर स्थायी किया। इसके बाद 15 नवम्बर को थाना अरनोद पुलिस ने संबंधित संपत्तियों पर फ्रीजिंग के बोर्ड लगाकर उन्हें फ्रीज कर दिया।

मादक पदार्थ तस्करी से जुड़ा है मामला- प्रकरण के अनुसार 1 अप्रैल 2026 को पुलिस थाना भोपालगढ़, जिला जोधपुर में समंदर पुत्र किशनाराम निवासी हिंगोली के कब्जे से 80.54 ग्राम एमडी और 1.25 ग्राम स्मैक बरामद की गई थी। इस संबंध में एनडीपीएस एक्ट की धारा 8/21, 22 एवं 29 के तहत प्रकरण दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार किया गया था। अनुसंधान में जब्त मादक पदार्थ वसीम खान पुत्र पुना उर्फ इस्माइल खान (45) निवासी देवल्दी थाना अरनोद जिला प्रतापगढ़ द्वारा उपलब्ध करवाना सामने आया। इस पर वसीम खान को 12 सितम्बर 2026 को गिरफ्तार कर अनुसंधान के बाद न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया गया। वह वर्तमान में केंद्रीय कारागृह जोधपुर में बंद है।

वित्तीय जांच में चिन्हित की गई 1.25 करोड़ की संपत्ति- वसीम खान द्वारा मादक पदार्थों की खरीद-फरोख्त एवं तस्करी से अवैध संपत्ति अर्जित करने की गोपनीय सूचना मिलने पर पुलिस ने उसकी चल-अचल संपत्तियों की वित्तीय जांच की। जांच में आरोपी द्वारा कम समय में अर्जित की गई संपत्तियों को चिन्हित किया गया, जिनका अनुमानित बाजार मूल्य करीब 1 करोड़ 25 लाख रुपये पाया गया।

वर्ष 2003 से अब तक 19 आपराधिक प्रकरण दर्ज- वसीम खान थाना अरनोद का हिस्ट्रीशीटर है और लंबे समय से मादक पदार्थों की खरीद-फरोख्त एवं तस्करी में लिप्त रहा है। उसके विरुद्ध वर्ष 2003 से 2026 तक राजस्थान और मध्यप्रदेश में कुल 19 आपराधिक प्रकरण दर्ज हैं।

इनमें हत्या, हत्या के प्रयास, मारपीट, अवैध हथियार रखने तथा ब्राउन शुगर और एमडी की तस्करी से जुड़े मामले शामिल हैं। राजस्थान में उसके विरुद्ध अरनोद, प्रतापगढ़, सालमगढ़ और भोपालगढ़ (जोधपुर) थानों में तथा मध्यप्रदेश में मंदसौर कोतवाली, बाणगंगा इंदौर, अपराध शाखा इंदौर और राऊ थाना क्षेत्र में प्रकरण दर्ज हैं। प्रतापगढ़ पुलिस द्वारा ऑपरेशन त्रिनेत्र के तहत मादक पदार्थों की तस्करी से अर्जित अवैध संपत्तियों की पहचान कर उन्हें फ्रीज करने की कार्रवाई लगातार की जा रही है।

इस कार्रवाई का उद्देश्य तस्करों के आर्थिक नेटवर्क पर प्रहार कर अवैध कारोबार से अर्जित संपत्ति के उपयोग और हस्तांतरण पर रोक लगाना है।

फ्रीज की गई संपत्तियों का विवरण

आलीशान मकान: गांव देवल्दी में आबादी भूमि पर बना मकान, टीनशेड एवं भूमि, जिसकी अनुमानित बाजार कीमत करीब 1 करोड़ 4 लाख रुपये है।

केटा कार: पंजीयन संख्या रक्क 09 ष्टह्व 9495, जिसकी अनुमानित बाजार कीमत करीब 12 लाख रुपये है।

जॉन डियर ट्रैक्टर: जिसकी अनुमानित बाजार कीमत करीब 9 लाख रुपये है।

इस प्रकार कुल करीब 1 करोड़ 25 लाख रुपये की संपत्ति को एनडीपीएस एक्ट के प्रावधानों के तहत फ्रीज किया गया है।

न्यूज इनबॉक्स

राज्यपाल बागडे ने राष्ट्रीय प्रेस दिवस की शुभकामनाएं दी

जयपुर (कासं)। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने भारतीय प्रेस परिषद (पीसीआई) की स्थापना के सम्मान में मनाए जाने वाले राष्ट्रीय प्रेस दिवस (16 नवंबर) की बधाई और शुभकामनाएं दी है। बागडे ने कहा कि यह दिवस लोकतंत्र के चौथे स्तंभ मीडिया की स्वतंत्रता और ज़िम्मेदारियों की ओर ध्यान आकर्षित करता है। उन्होंने कहा कि स्वतंत्र और जिम्मेदार प्रेस से ही लोकतंत्र सुदृढ़ होता है। उन्होंने लोकतंत्र की सुदृढ़ता के लिए सबको मिलकर कार्य करने का आह्वान किया है।

ओम बिरला ने दिवंगत जसवंत सिंह यादव को दी श्रद्धांजलि

जयपुर (कासं)। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला एवं चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर तथा पूर्व सांसद सुखबीर सिंह जौनपुरिया ने बहरोड विधायक एवं पूर्व मंत्री दिवंगत डॉ. जसवंत सिंह यादव के निधन पर उनके अलवर स्थित आवास पर पहुंचकर उनके चित्र पर श्रद्धासुमन अर्पित कर भावभानी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा शोक संतृप्त परिवारजनों को ढाढस बंधाया। इस दौरान वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संजय शर्मा, रामगढ विधायक सुखवंत सिंह, पूर्व विधायक बनवारी लाल सिंघल व मंगलराम कोली सहित अन्य जनप्रतिनिधिगणों ने बहरोड विधायक एवं पूर्व मंत्री दिवंगत डॉ. जसवंत सिंह यादव को श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

शांति और अहिंसा को जन-जन तक पहुंचाने में जैन धर्म का बड़ा योगदान-राज्यपाल

जयपुर (कासं)। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे रविवार को टोंक जिले की नगरपालिका निवाई पहुंचे। जहां बागडे जैन संत आचार्य सुंदर सागर जी महाराज के 50वें स्वर्णिम जन्मोत्सव समारोह में शामिल हुए। राज्यपाल बागडे ने कहा कि जैन धर्म अहिंसा, आत्मसंयम और त्यागशील जीवन जीने की सीख देता है। भगवान महावीर स्वामी ने संयम और सरलता को जीवन का आदर्श रुप बताया है। शांति और अहिंसा को जन-जन तक पहुंचाने में जैन धर्म का बहुत बड़ा योगदान है। यह जीवित प्राणियों में अनुशासित और आत्मिक शुद्धता पर जोर देता है। राज्यपाल बागडे ने जैन श्रद्धालुओं से कहा कि सनातन संस्कृति में गौमाता की सेवा को सबसे बड़ा और पुण्यकारी माना गया है। जैन धर्म गौमाता की देखभाल, गौशालाओं में आर्थिक दान, चारे की व्यवस्था और संरक्षण में भी अग्रणी है। उन्होंने आचार्य सुंदर सागर जी महाराज और अन्य साधु साध्वियो को प्रणाम निवेदित किया और उनका आशीर्वाद लिया।

'पिच्छी परिवर्तन महोत्सव युवाओं को धर्म व संस्कृति से जोड़ने का अपूर्व अवसर'

जयपुर (कासं)। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे रविवार को चाकसू तहसील के ग्राम निमोडिया पहुंचे। उन्होंने वहां जैन संत आचार्य प्रज्ञासागर जी महाराज के सान्निध्य में आयोजित चातुर्मास समारोह में भाग लिया। इस दौरान उन्होंने वहां पिच्छी परिवर्तन महोत्सव में भी भाग लिया और कहा कि युवाओं को धर्म व संस्कृति से जोड़ने का यह अपूर्व अवसर है। राज्यपाल बागडे ने कहा कि जैन धर्म नहीं संस्कृति है। उन्होंने जैन धर्म की अहिंसा, सहिष्णुता,अपरिग्रह के संदेशों को सभी को आत्मसात करने का आह्वान किया। राज्यपाल बागडे श्रद्धालुओं को आचार्य, मुनिराज और आर्यिका माताजी को नई पिच्छी भेंट करने और उनकी पुरानी पिच्छी को प्रसाद स्वरूप प्राप्त करने की घटना के भी साक्षी बने। उन्होंने जैन साधु-साध्वियां द्वारा अपने साथ मोर के पंखों से बनी 'पिच्छी' के जरिए सूक्ष्म जीव को भी कष्ट न पहुंचने की सोच को धर्म की उदात्त दृष्टि बताते हुए आचार्य प्रज्ञासागर जी महाराज और अन्य साधु साध्वियां को प्रणाम निवेदित किया और उनका आशीर्वाद लिया।

बाल दिवस पर रेलवे कर्मचारियों के मेधावी बच्चों का सम्मान समारोह आयोजित

जयपुर (कासं)। बाल दिवस के अवसर पर 14 नवंबर क्रो दी जैक्सन को-ऑपरेटिव क्रेडिट सोसाइटी ऑफ़ द एम्प्लाय ऑफ़ रेलवे लिमिटेड द्वारा अरावली सभागार, गणपति नगर, जयपुर में प्रतिभावान छात्र-छात्राओं का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। समारोह में लगभग 300 विद्यार्थी एवं अभिभावक शामिल हुए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि Sr. DPO सत्येंद्र यादव एवं Sr. DEE नितेश कुमार मीणा ने कक्षा 10वीं, 12वीं, स्नातक, परा स्नातक एवं खेलकूद में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले सोसाइटी मे अंशधारक रेल अधिकारियों /कर्मचारियों के मेधावी विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र एवं उपहार देकर सम्मानित किया गया। अतिथियों ने बच्चों को मेहनत, अनुशासन एवं लगन के साथ जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। सोसाइटी पदाधिकारियों ने कहा कि संस्था सदस्यों के आर्थिक हितों के साथ-साथ उनके परिवार एवं बच्चों के उज्वल भविष्य के लिए भी प्रतिबद्ध है। सम्मान समारोह मे उप सभापति सुभाष चंद मीणा, निदेशक जयपुर सुरेंद्र सिंह बधाला तथा अजमेर के निदेशक प्रवीण एवं महेश उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन निदेशक सुरेंद्र सिंह बधाला ने किया। कार्यक्रम में जयपुर शाखा प्रबंधक सुनील कुमार सामरिया, प्रबंधक प्रथम विक्रम सिंह भाटी एवं अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे। समारोह उत्साहपूर्ण एवं गरिमामय वातावरण में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

एक ही रात में 5 मंदिरों और 3 मकानों में चोरी करने वाली गैंग का सरगना गिरफ्तार

जयपुर (कासं)। उदयपुर जिले की सुखेर थाना पुलिस ने मंदिरों और मकानों में चोरी की वारदातों को अंजाम देने वाली गैंग के फरार मुख्य सरगना एवं 5 हजार रुपये के इनामी बदमाश दुर्गेश उर्फ दुर्गा लाल को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। आरोपी को रविवार को ओगणा क्षेत्र के घने जंगलों में दबिश देकर पकड़ा गया। पुलिस पूर्व में ही गैंग के तीन अन्य सदस्यों को गिरफ्तार कर चोरी की गई मूर्तियां और पूजा सामग्री बरामद कर चुकी है। जिला पुलिस अधीक्षक उदयपुर डॉ. अमृता दुहन के निर्देशानुसार वांछित एवं इनामी अपराधियों की धरपकड़ के लिए चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत यह कार्रवाई की गई। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शहर उमेश ओझा एवं वृत्ताधिकारी नगर पश्चिम राजेश यादव के सुपरविजन में थानाधिकारी सुखेर भरत योगी के नेतृत्व में गठित टीम ने फरार आरोपी को गिरफ्तार किया।

घटना 26 सितम्बर 2026 की मध्यरात्रि की है। सुखेर थाना क्षेत्र के ग्राम डांगियों का गुड़ा में अज्ञात बदमाशों ने एक ही रात में पांच मंदिरों और तीन बंद मकानों के ताले तोड़कर चोरी की वारदातों को अंजाम दिया था। चोर मंदिरों से चांदी की मूर्तियां, चांदी के छत्र और दानपेटियां तोड़कर नकदी चुरा ले गए थे। इस संबंध में परिवादी बंशीलाल डांगी की रिपोर्ट पर थाना सुखेर में प्रकरण दर्ज कर अनुसंधान शुरू किया गया। घटना की गंभीरता और ग्रामीणों की मांग को देखते हुए जिला पुलिस अधीक्षक डॉ. अमृता दुहन ने विशेष पुलिस टीम गठित की। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए गैंग के तीन सदस्यों मेघाराम, कमलेश और भैराराम को पूर्व में गिरफ्तार कर लिया था।

श्रीगंगानगर के रामसिंहपुर रेलवे ट्रैक बम विस्फोट मामले में बड़ा खुलासा

रेलवे ट्रैक बम धमाके के तार पाकिस्तान से जुड़े, पंजाब से दो गिरफ्तार



जयपुर (कासं)। श्रीगंगानगर जिले के रामसिंहपुर थाना क्षेत्र में रेलवे ट्रैक पर हुए बम विस्फोट के मामले में राजस्थान एटीएस और जिला पुलिस ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को पंजाब के गुरदासपुर से गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपियों में महकदीप कौर और देवेंद्र सिंह शामिल हैं। प्रारंभिक अनुसंधान में महकदीप कौर के पाकिस्तानी हैंडलर के संपर्क में होने तथा अपने साथी के साथ मिलकर विस्फोट की वारदात को अंजाम देने के तथ्य सामने आए हैं। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से दो विदेशी पिस्टल, 46 जिंदा कारतूस और विस्फोट के लिए प्राप्त 30 हजार रुपये बरामद किए हैं।

महानिदेशक पुलिस राजस्थान राजीव शर्मा ने 3 नवम्बर 2026 को हुई इस गंभीर घटना को देखते हुए एडीजीपी एटीएस, एजीटीएफ एवं एएनटीएफ दिनेश एम.एन. तथा महानिरीक्षक पुलिस बीकानेर रेंज ओमप्रकाश को आवश्यक निर्देश दिए। निर्देशों की पालना में महानिरीक्षक पुलिस एटीएस राजेश सिंह एवं महानिरीक्षक पुलिस बीकानेर रेंज ओमप्रकाश ने घटनास्थल का निरीक्षण कर प्रकरण की मॉनिटरिंग की तथा एटीएस और श्रीगंगानगर जिला पुलिस को सभी पहलुओं पर गंभीरता से अनुसंधान करने के निर्देश दिए। एडीजीपी दिनेश एम.एन. के निर्देशन में एटीएस और श्रीगंगानगर जिला पुलिस अधीक्षक हरिशंकर के नेतृत्व में संयुक्त टीम गठित की गई। अनुसंधान के दौरान विभिन्न केंद्रीय जांच एजेंसियों से भी संपर्क कर इनपुट प्राप्त किए गए। प्राप्त सूचनाओं और उनके तकनीकी विश्लेषण के आधार पर गुरदासपुर निवासी महकदीप कौर और देवेंद्र सिंह की घटना में संलिप्तता की संभावना सामने आई। इसके बाद संदिग्धों के तकनीकी तथ्यों और सोशल मीडिया अकाउंट्स का विस्तृत विश्लेषण किया गया। सूचना का सत्यापन करने के लिए प्रकरण के अनुसंधान अधिकारी प्रशिक्षु आईपीएस नितिन चौधरी तथा एटीएस यूनिट बीकानेर के प्रभारी सुरेंद्र कुमार के नेतृत्व में संयुक्त टीम पंजाब भेजी गई। टीम ने काउंटर इंटेलीजेंस पंजाब तथा गुरदासपुर के एसएसपी आदित्य आईपीएस के साथ आसूचना एवं तकनीकी विश्लेषण से संबंधित जानकारी साझा की।

संयुक्त कार्रवाई में शनिवार 14 नवम्बर को गुरदासपुर से महकदीप कौर और देवेंद्र सिंह को दस्तयाब कर पूछताछ के बाद गिरफ्तार किया गया। प्रारंभिक जांच के अनुसार महकदीप कौर का पति करणवीर सिंह मादक पदार्थ तस्करी के मामले में पंजाब में गिरफ्तार हुआ था। इसके बाद महकदीप कौर के कथित रूप से पाकिस्तान स्थित हैंडलरों के संपर्क में आने की जानकारी सामने आई है। जांच में शाह नामक पाकिस्तानी हैंडलर तथा पाकिस्तान में चाचा नाम से पहचाने जाने वाले व्यक्ति के निर्देशों पर आरोपियों द्वारा रेलवे ट्रैक पर विस्फोट करने की साजिश रचने की बात सामने आई है। अनुसंधान के अनुसार आरोपियों ने सबसे पहले 6 अक्टूबर 2026 को रामसिंहपुर थाना क्षेत्र में रेलवे ट्रैक पर विस्फोट करने की योजना बनाई थी, लेकिन बम उपलब्ध नहीं होने के कारण योजना को अंजाम नहीं दिया जा सका। इसके बाद 12-13 अक्टूबर को पाकिस्तानी हैंडलर शाह द्वारा उपलब्ध करवाए गए टाइमर बम को रेलवे ट्रैक पर लगाया गया, लेकिन तकनीकी खामियों के कारण विस्फोट नहीं हो सका। अंतत: 3 नवम्बर 2026 को रात करीब 9:45 बजे उपलब्ध करवाए गए टाइमर बम से रेलवे ट्रैक पर विस्फोट किया गया। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार महिला होने के कारण संदेह से बचने की मंशा से रामसिंहपुर क्षेत्र का चयन किया गया। जांच में आरोपियों को ऑनलाइन माध्यम से भुगतान प्राप्त होने तथा सोशल मीडिया पर सक्रिय गैंगस्टरों की प्रोफाइल फॉलो करने और उनसे प्रभावित होने के तथ्य भी सामने आए हैं।

राज्यपाल बागड़े की अध्यक्षता में संपन्न होगी वीएमओयू की अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस



जयपुर (कासं)। वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा के कुलगुरु प्रोफेसर बी.एल. वर्मा ने राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े से शिष्टाचार भेंट की एवं दीपावली की शुभकामनाएं प्रदान की। जनसंपर्क प्रकोष्ठ के सह संयोजक विक्रम राठौड़ ने बताया कि प्रोफेसर वर्मा ने राज्यपाल को वीएमओयू की ओर से दिनांक 17-18 दिसंबर को आयोजित होने वाली दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में मुख्य अतिथि एवं अध्यक्ष के रूप में शामिल होने का आमंत्रण भी दिया। राज्यपाल ने विश्वास व्यक्त किया कि यह अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस राजस्थान को अंतरराष्ट्रीय मुक्त शिक्षा के मानचित्र पर और अधिक सशक्त पहचान दिलाएगी। कुलगुरु प्रो.वर्मा ने राज्यपाल को कॉन्फ्रेंस से जुडी आयोजन की तैयारियों के संबंध में विस्तार से जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि इस अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा, अनुसंधान, नवाचार एवं उच्च शिक्षा के बदलते स्वरूप से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों पर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के शिक्षाविद्, विशेषज्ञ और शोधार्थी अपने विचार साझा करेंगे। कुलगुरु प्रो.बी.एल.वर्मा ने कहा कि राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े की अध्यक्षता में आयोजित होने वाली यह अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में अकादमिक संवाद, वैश्विक ज्ञान के आदान- प्रदान और नवीन शैक्षणिक संभावनाओं को प्रोत्साहित करने के साथ मुक्त शिक्षा में वैश्विक सहयोग का मार्ग प्रशस्त करेगी।

राष्ट्र की मजबूती के लिए घर वापसी अभियान जारी रखें- देवनानी

जयपुर। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने आर्य समाज से राष्ट्र और समाज की मजबूती के लिए स्वामी श्रद्धानंद द्वारा शुरू किए गए घर वापसी अभियान को निरंतर जारी रखने का आह्वान किया। उन्होंने लव-कुश उद्यान से सुभाष उद्यान तक प्रस्तावित महर्षि दयानंद मार्ग का लोकार्पण जल्द कराने की घोषणा भी की। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी रविवार को अजमेर में आयोजित स्वामी श्रद्धानंद बलिदान शताब्दी समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानंद केवल स्वाधीनता सैनानी अथवा समाज सुधारक ही नहीं थे, बल्कि वे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने अपने जीवन में राष्ट्र, समाज और धर्म के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। स्वामी श्रद्धानंद ने हिंदुओं के धर्म परिवर्तन से उत्पन्न खतरे को समय रहते समझा और घर वापसी अभियान प्रारंभ किया। इस अभियान के माध्यम से उन्होंने बड़ी संख्या में ऐसे लोगों की मूल सनातन धर्म में वापसी कराई, जिन्होंने धर्म परिवर्तन कर लिया था। देवनानी ने कहा कि उस समय स्वामी श्रद्धानंद ने जिस चुनौती को पहचाना था, वह आज भी पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। इसलिए आर्य समाज को उनके विचारों और कार्यों को आगे बढ़ाते हुए घर वापसी अभियान जारी रखना चाहिए।

बाल दिवस पर बच्चों ने सड़क सुरक्षा रैली निकालकर दिया यातायात नियमों की पालना का संदेश

हेलमेट, सीट बेल्ट एवं वाहन चलाते समय मोबाइल का उपयोग नहीं करने के प्रति किया जागरूक



जयपुर (कासं)। बाल दिवस को राज्य सड़क सुरक्षा दिवस तथा विश्व सड़क दुर्घटना पीड़ित स्मरण दिवस के उपलक्ष्य में यातायात पुलिस जयपुर और एक निजी विद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में भगवान दास रोड एवं आसपास सड़क सुरक्षा जागरूकता रैली आयोजित की गई। रैली में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा विभिन्न संदेशों के माध्यम से आमजन को यातायात नियमों की पालना और सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक किया।

पुलिस कमिश्नर सचिन मित्तल, अतिरिक्त पुलिस कमिश्नर (प्रशासन एवं यातायात) प्रदीप मोहन, पुलिस उपायुक्त (यातायात) प्रवीण नायक नूनावत के निर्देशन में आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य बाल दिवस के अवसर पर बच्चों में सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता विकसित करना तथा सड़क दुर्घटनाओं में जान गंवाने वाले लोगों को स्मरण कर आमजन को सुरक्षित यातायात के प्रति जागरूक करना रहा। रैली के दौरान विद्यार्थियों ने सड़क सुरक्षा से संबंधित स्लोगन लिखी तख्तियां लेकर आमजन एवं वाहन चालकों को यातायात नियमों की पालना करने का संदेश दिया। बच्चों ने दोपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट पहनने, कार में सीट बेल्ट लगाने, निर्धारित गति सीमा में वाहन चलाने तथा वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का उपयोग नहीं करने के लिए प्रेरित किया। विद्यार्थियों ने अपने संदेशों के माध्यम से बताया कि यातायात नियमों की अनदेखी सड़क दुर्घटनाओं का कारण बन सकती है तथा थोड़ी सी सावधानी कई अनमोल जीवन बचा सकती है। इस अवसर पर अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त, यातायात दक्षिण श्रीमती सुनीता मीणा ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया तथा उन्हें सड़क सुरक्षा नियमों की जानकारी दी।

राज्य निर्वाचन आयुक्त राजेश्वर सिंह ने मतदान केन्द्रों का किया निरीक्षण

वरिष्ठ नागरिकों एवं दिव्यांग मतदाताओं की सुविधा का विशेष ध्यान रखने के दिए निर्देश



जयपुर (कासं)। पंचायतीराज आम चुनाव-2026 के तहत सोमवार को होने वाले सरपंच एवं वार्ड पंच पदों के मतदान की तैयारियों का जायजा लेने के लिए राज्य निर्वाचन आयुक्त राजेश्वर सिंह ने रविवार को मामचारी, अतैवा, राजौर एवं कैलादेवी में मतदान केन्द्रों का निरीक्षण किया। इस दौरान जिला निर्वाचन अधिकारी एवं जिला कलक्टर अक्षय गोदारा तथा पुलिस अधीक्षक लोकेश सोनवाल भी उनके साथ मौजूद रहे। निरीक्षण के दौरान राज्य निर्वाचन आयुक्त ने मतदान केन्द्रों पर मतदाताओं के लिए की गई मूलभूत व्यवस्थाओं को देखा। उन्होंने केन्द्रों पर पेयजल, बिजली, पर्याप्त प्रकाश, शौचालय, साफ-सफाई, छाया तथा दिव्यांग और वरिष्ठ मतदाताओं के लिए रैम्प एवं व्हीलचेयर की उपलब्धता की जांच की। उन्होंने निर्देश दिए कि मतदान के दिन किसी भी मतदाता को अनावश्यक असुविधा न हो और विशेष आवश्यकता वाले मतदाताओं के प्रति संवेदनशील एवं सहयोगपूर्ण व्यवहार रखा जाए। इस अवसर पर जिला निर्वाचन अधिकारी एवं जिला कलक्टर अक्षय गोदारा ने मतदान केन्द्रों पर की गई प्रशासनिक व्यवस्थाओं, मतदान दलों की रवानगी, सामग्री वितरण और सेक्टर अधिकारियों की निगरानी व्यवस्था की विस्तृत जानकारी दी। वहीं, पुलिस अधीक्षक लोकेश सोनवाल ने संवेदनशील एवं क्रिटिकल मतदान केन्द्रों पर तैनात किए गए पुलिस जाब्ते, सुरक्षा घेरे और कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैयार किए गए सुरक्षा प्लान से अवगत कराया।

राज्य निर्वाचन आयुक्त ने मतदान केन्द्रों पर प्रवेश और निकास मार्गों को सुगम बनाए रखने, भीड़ नियंत्रण तथा राज्य निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशों की अक्षरश: पालना सुनिश्चित करते हुए स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण मतदान सम्पन्न कराने के निर्देश दिए। इस दौरान राज्य निर्वाचन आयुक्त ने मतदान केंद्रों पर उपलब्ध सुविधाओं एवं सुरक्षा व्यवस्थाओं पर संतोष व्यक्त किया। साथ ही, उन्होंने जिले में संचालित स्वीप गतिविधियों की सराहना करते हुए कहा कि इन मतदाता जागरूकता कार्यक्रमों के सकारात्मक परिणामस्वरूप जिले के मतदान प्रतिशत में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। निरीक्षण के दौरान रिटर्निंग अधिकारी (एसडीएम) राकेश कुमार रावत, एडीपीआर धर्मेंद्र कुमार मीणा सहित अन्य अधिकारी, निर्वाचन कार्मिक एवं पुलिस अधिकारी उपस्थित रहे।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक कैलाश त्रिवेदी के लिए उदय प्रिन्टर्स 43-ए, माली कॉलोनी चांदपोल बाहर जयपुर से मुद्रित एवं डी-38, प्रधानपथ, चौमू हाउस, सी स्कीम, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक कैलाश त्रिवेदी* । *पीआईबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार।
फोनः 0141-4038281, Email:- lokjeewanjpr@gmail.com भीलवाड़ा कार्यालयः 207-214, नागौरी गार्डन, लोकजीवन कॉम्पलेक्स, भीलवाड़ा। फोनः 01482-355985, Email:- lokjeewan@gmail.com, मो. 8306792625